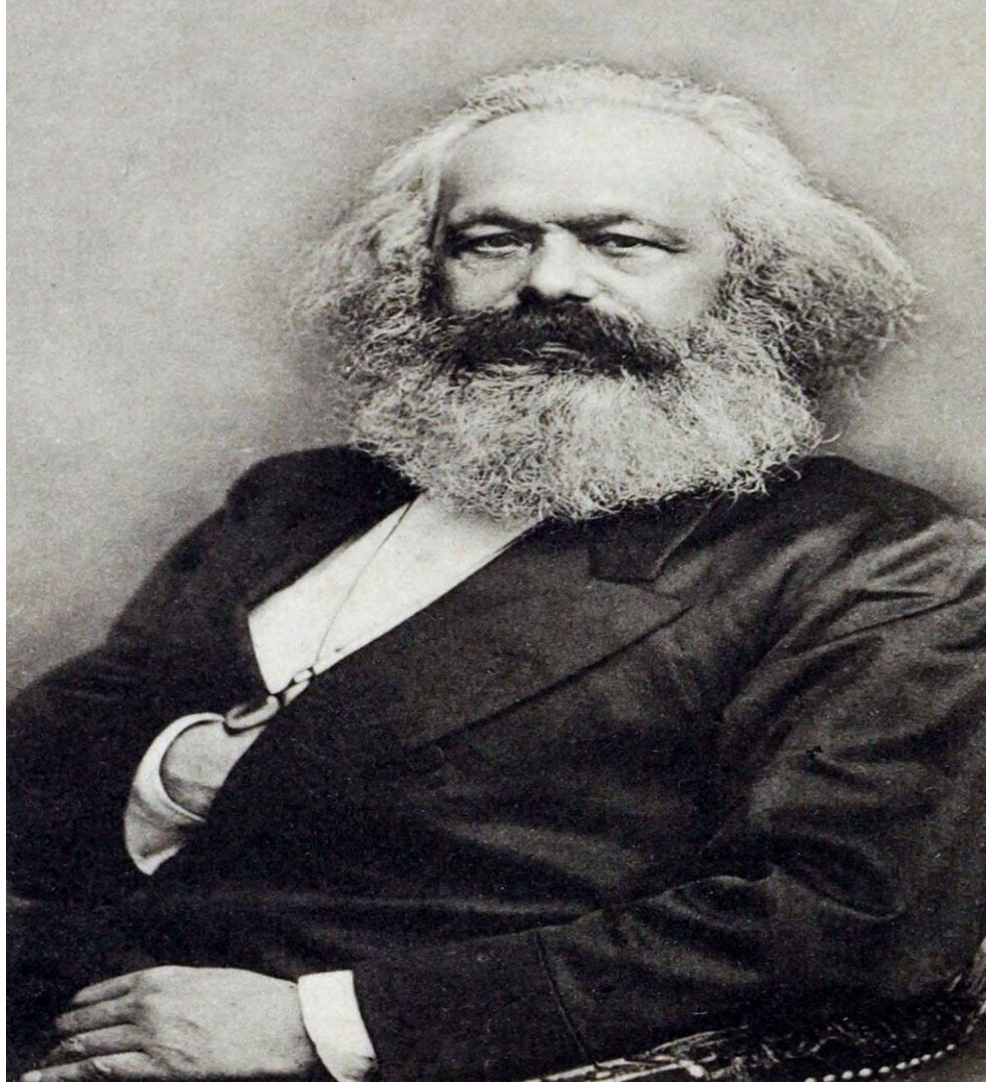


KARL MARX (1818-1883)



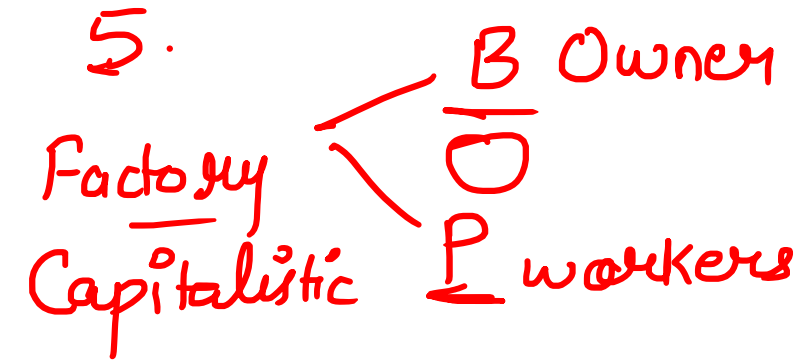
- Karl Heinrich Marx was born on the 5th May, 1818, in Trier, Prussia in Germany.
- Kark Marx is a Macro thinker and is known as Founder of Conflict Perspective.
- Marx emphasized economic determinism, arguing that a society's technological level shapes its economic system, which in turn determines its cultural and political characteristics.

- कार्ल हेनरिक मार्क्स का जन्म 5 मई, 1818 को जर्मनी में प्रशिया के ट्रायर में हुआ था।
- कर्क मार्क्स एक स्थूल विचारक हैं और उन्हें संघर्ष परिप्रेक्ष्य के संस्थापक के रूप में जाना जाता है।
- मार्क्स ने आर्थिक नियतिवाद पर जोर देते हुए तर्क दिया कि किसी समाज का तकनीकी स्तर उसकी आर्थिक प्रणाली को आकार देता है, जो बदले में उसकी सांस्कृतिक और राजनीतिक विशेषताओं को निर्धारित करता है।

- He is known as **Father of Scientific Socialism** because he gave a scientific basis to the class struggle of the proletariat against the capitalists, and who showed with the precision of science that this struggle will inevitably lead to the conquest of political power by the proletariat and the establishment of a new social system without exploitation – socialism.

- उन्हें **वैज्ञानिक समाजवाद के जनक** के रूप में जाना जाता है क्योंकि उन्होंने पूंजीपतियों के खिलाफ सर्वहारा वर्ग के वर्ग संघर्ष को वैज्ञानिक आधार दिया, और जिन्होंने विज्ञान की सटीकता के साथ दिखाया कि यह संघर्ष अनिवार्य रूप से सर्वहारा वर्ग द्वारा राजनीतिक शक्ति की विजय का कारण बनेगा। शोषण रहित नई सामाजिक व्यवस्था - समाजवाद की स्थापना।

Mode of Production
Stages



HISTORICAL MATERIALISM – economic

- 'Historical Materialism' or 'the materialistic conception of history' is the pivot to all of Marx' works. Its clearest exposition is done in his 'Contribution to the Critique of political Economy, 1859'. It is a conception of society in terms of evolutions from one stage to another, which Marx refers as modes of production, and material or economic factors have a pivotal role in historical change. It is an inquiry into nature of relations between man and man, and man and things as history proceeds.

ऐतिहासिक भौतिकवाद – आर्थिक

- 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' या 'इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा' मार्क्स के सभी कार्यों की धुरी है। इसका स्पष्ट प्रतिपादन उनकी 'राजनीतिक अर्थव्यवस्था की आलोचना में योगदान, 1859' में होता है। यह एक चरण से दूसरे चरण तक विकास के संदर्भ में समाज की एक अवधारणा है, जिसे मार्क्स उत्पादन के तरीकों के रूप में संदर्भित करता है, और ऐतिहासिक परिवर्तन में भौतिक या आर्थिक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जैसे-जैसे इतिहास आगे बढ़ता है, यह मनुष्य और मनुष्य तथा मनुष्य और वस्तुओं के बीच संबंधों की प्रकृति की जांच है।

- His theory is called 'historical' because analysis of society is in terms of evolution from one state to another in terms of history. According to Marx, 'History is a process of man's self creation'. Since man's involvement into relations of production creates history, it is necessary to understand history to understand society.
- It is called 'materialistic' for two reasons – firstly, his conception of society is based upon materialistic factors which are understood in terms of production. Secondly, understanding of change is based upon changing material conditions and not ideas.

MOP - 6

Bullock
Hoe

Machine
Tractor

- उनके सिद्धांत को 'ऐतिहासिक' कहा जाता है क्योंकि समाज का विश्लेषण इतिहास के संदर्भ में एक राज्य से दूसरे राज्य में विकास के संदर्भ में होता है। मार्क्स के अनुसार, 'इतिहास मनुष्य की आत्म-निर्माण की एक प्रक्रिया है।' चूंकि उत्पादन के संबंधों में मनुष्य की भागीदारी इतिहास रचती है, इसलिए समाज को समझने के लिए इतिहास को समझना आवश्यक है।
- इसे दो कारणों से 'भौतिकवादी' कहा जाता है - पहला, समाज की उनकी अवधारणा भौतिकवादी कारकों पर आधारित है जिन्हें उत्पादन के संदर्भ में समझा जाता है। दूसरे, परिवर्तन की समझ बदलती भौतिक स्थितियों पर आधारित होती है न कि विचारों पर।

Further, his theory of historical materialism has two aspects

—

1. His materialistic conception of society is in terms of 'economic infrastructure' and 'social superstructure'.
2. He understands the historical evolution process in terms of a 'dialectic process'.

इसके अलावा, ऐतिहासिक भौतिकवाद के उनके सिद्धांत के दो पहलू हैं -

1. समाज की उनकी भौतिकवादी अवधारणा 'आर्थिक बुनियादी ढांचे' और 'सामाजिक अधिरचना' के संदर्भ में है।
2. वह ऐतिहासिक विकास प्रक्रिया को 'द्वंद्ववात्मक प्रक्रिया' के संदर्भ में समझते हैं।

- Marx borrowed ideas of Historical or Dialectical Materialism from Hegelian notions of 'Dialectical Idealism', but Marx felt that Hegel's idealism led to a very conservative political orientation, and Ludwig Feuerbach's – a Young Hegelian – notion of 'Materialism'. Thus, he retained the dialectical approach of Hegel, but replaced the idealism with Feuerbach's materialism.

- मार्क्स ने 'द्वंद्वात्मक आदर्शवाद' की हेगेलियन धारणाओं से ऐतिहासिक या द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की विचारधारा उधार ली, लेकिन मार्क्स ने महसूस किया कि हेगेल के आदर्शवाद ने एक बहुत ही रूढ़िवादी राजनीतिक अभिविन्यास को जन्म दिया, और लुडविग फेयरबैक - एक युवा हेगेलियन - ने 'भौतिकवाद' की धारणा को जन्म दिया। इस प्रकार, उन्होंने हेगेल के द्वंद्वात्मक दृष्टिकोण को बरकरार रखा, लेकिन आदर्शवाद को फेयरबैक के भौतिकवाद से बदल दिया।

विचारधारा Engels
Dialectical Materialism
Hegel Feuerbach

- Marx believed that, material sources and conditions and not ideas per se are important in working of any 'mode of production'. Material world is characterized by its own independent existence and is not a result of human thinking.
- मार्क्स का मानना था कि, किसी भी 'उत्पादन के तरीके' के संचालन में भौतिक स्रोत और स्थितियाँ महत्वपूर्ण हैं, न कि विचार। भौतिक संसार की विशेषता उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व है और यह मानवीय सोच का परिणाम नहीं है।



- Its basic idea of dialectical philosophy is the centrality of contradiction.
- The triad thesis, antithesis, and synthesis is often used to describe the thought Hegel.
- The triad is usually described in the following way:

- द्वंद्वात्मक दर्शन का इसका मूल विचार विरोधाभास की केंद्रीयता है।
- हेगेल के विचार का वर्णन करने के लिए अक्सर त्रय थीसिस, एंटीथिसिस और संश्लेषण का उपयोग किया जाता है।
- त्रय का वर्णन आमतौर पर निम्नलिखित तरीके से किया जाता है:



Thesis
An-
Sy-

Kan ✓
Hegel

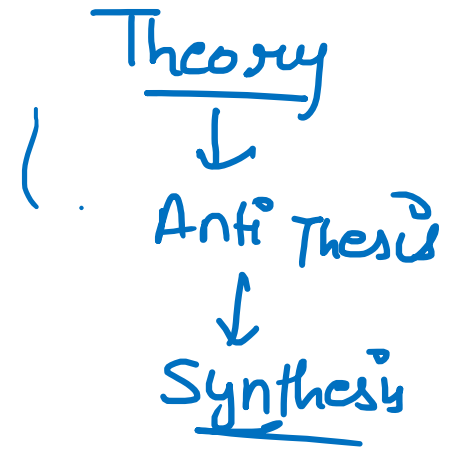
Dialectical Materialism



Mode of Production
Stages

Tribal
Slavery
Feudal
Cap
/

- ✓ The thesis is an intellectual proposition.
- ✓ The antithesis is simply the negation of the thesis, a reaction to the proposition.
- ✓ The synthesis solves the conflict between the thesis and antithesis by reconciling their common truths and forming a new proposition.
- The laws of dialectical materialism are applied to understand the successive forms and modes of production and hence social change.



- थीसिस एक बौद्धिक प्रस्ताव है।
- प्रतिपक्षी केवल थीसिस का निषेध है, प्रस्ताव की प्रतिक्रिया है।
- संश्लेषण थीसिस और एंटीथिसिस के बीच के संघर्ष को उनके सामान्य सत्यों को समेटकर और एक नया प्रस्ताव बनाकर हल करता है।
- द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के नियमों को उत्पादन के क्रमिक रूपों और तरीकों और इसलिए सामाजिक परिवर्तन को समझने के लिए लागू किया जाता है।

MODE of PRODUCTION (उत्पादन का तरीका)

$$\underline{FOP + ROP = MOP}$$

- It is the term which Marx uses for a particular social formation or society. It is uniquely defined in terms of a particular 'force of production' and 'relations of production' in a materialistic context.
- Marx defined the evolution of mankind in terms of various stages which he referred to as 'modes of production'.
- It is defined as combination of a particular force of production and relations of production in a material context.
- यह वह शब्द है जिसे मार्क्स किसी विशेष सामाजिक संरचना या समाज के लिए उपयोग करता है। इसे भौतिकवादी संदर्भ में एक विशेष 'उत्पादन की शक्ति' और 'उत्पादन के संबंधों' के संदर्भ में विशिष्ट रूप से परिभाषित किया गया है।
- मार्क्स ने मानव जाति के विकास को विभिन्न चरणों के रूप में परिभाषित किया, जिसे उन्होंने 'उत्पादन के तरीके' कहा।
- इसे भौतिक संदर्भ में उत्पादन की एक विशेष शक्ति और उत्पादन के संबंधों के संयोजन के रूप में परिभाषित किया गया है।

FORCES OF PRODUCTION

The forces of production express the degree to which human beings control nature. The more advanced the productive forces are, greater is their control over the nature and vice versa. The forces of production are the ways in which material goods are produced. They include the technological know-how, the types of equipment in use and goods being produced for example, tools, machinery, labour and the levels of technology are all considered to be the forces of production.

उत्पादन की शक्तियाँ

उत्पादन की शक्तियाँ उस सीमा को व्यक्त करती हैं जिस हद तक मनुष्य प्रकृति पर नियंत्रण रखता है। उत्पादक शक्तियाँ जितनी अधिक उन्नत होंगी, प्रकृति पर उनका नियंत्रण उतना ही अधिक होगा और इसके विपरीत भी। उत्पादन की शक्तियाँ वे तरीके हैं जिनसे भौतिक वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। उनमें तकनीकी जानकारी, उपयोग में आने वाले उपकरणों के प्रकार और उत्पादित होने वाली वस्तुएं शामिल हैं, उदाहरण के लिए उपकरण, मशीनरी, श्रम और प्रौद्योगिकी के स्तर सभी को उत्पादन की शक्तियां माना जाता है।

- The forces of production, according to Marx, include means of production and labour power . The development of machinery, changes in the labour process, the opening up of new sources of energy and the education of the workers are included in the forces of production.
- Major changes in society occur when new forces of production are evolved (which also create new relations of production) which replace the older ones and create a new mode of production. A contradiction between the older and new forces of production is resolved by replacement of older mode of production by the newer one.
- मार्क्स के अनुसार उत्पादन की शक्तियों में उत्पादन के साधन और श्रम शक्ति शामिल हैं। उत्पादन की शक्तियों में मशीनरी का विकास, श्रम प्रक्रिया में बदलाव, ऊर्जा के नए स्रोतों का खुलना और श्रमिकों की शिक्षा शामिल है।
- समाज में बड़े परिवर्तन तब होते हैं जब उत्पादन की नई ताकतें विकसित होती हैं (जो उत्पादन के नए संबंध भी बनाती हैं) जो पुराने संबंधों को प्रतिस्थापित करती हैं और उत्पादन की एक नई पद्धति का निर्माण करती हैं। उत्पादन की पुरानी और नई शक्तियों के बीच विरोधाभास का समाधान उत्पादन की पुरानी पद्धति को नई पद्धति से प्रतिस्थापित करने से होता है।

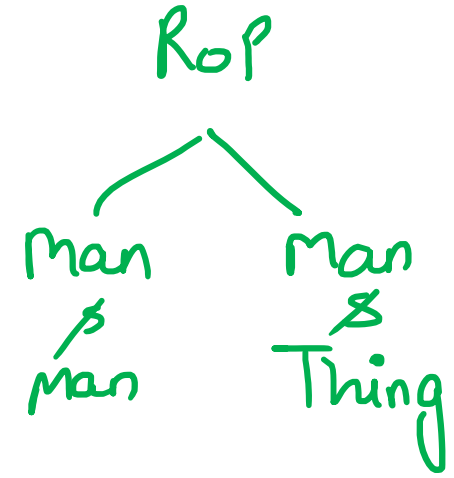
- In every society, there is centrality of one major thing. For example – in feudal society, land is central, in capitalist society, capital is central. Forces of production help in transforming the things which are available in nature into things which can be exchanged in market.
- Forces of production also represent man's control over nature. As the history proceeds, man's control over nature increases. Thus, man and nature are in a state of constant struggle. Thus, the development in the forces of production can be seen in terms of man's increasing control over nature.

land, labour,
technology,

- प्रत्येक समाज में एक प्रमुख बात की केन्द्रीयता होती है। उदाहरण के लिए - सामंती समाज में भूमि केन्द्रीय होती है, पूँजीवादी समाज में पूँजी केन्द्रीय होती है। उत्पादन की शक्तियाँ प्रकृति में उपलब्ध चीज़ों को ऐसी चीज़ों में बदलने में मदद करती हैं जिनका बाज़ार में आदान-प्रदान किया जा सकता है।
- उत्पादन की शक्तियाँ प्रकृति पर मनुष्य के नियंत्रण का भी प्रतिनिधित्व करती हैं। जैसे-जैसे इतिहास आगे बढ़ता है, प्रकृति पर मनुष्य का नियंत्रण बढ़ता जाता है। इस प्रकार, मनुष्य और प्रकृति निरंतर संघर्ष की स्थिति में हैं। इस प्रकार, उत्पादन की शक्तियों में विकास को प्रकृति पर मनुष्य के बढ़ते नियंत्रण के रूप में देखा जा सकता है।

RELATIONS OF PRODUCTION (उत्पादन के संबंध)

- The forces of production are not the only factors in material production. People are able to produce jointly by organising in a society. According to Marx, in order to produce, people enter into definite relations with one another. Only within these social relations does production take place.
- Relations of Production or social relations of production, according to Marx, are of two types in any mode of production –
- भौतिक उत्पादन में उत्पादन की शक्तियाँ ही एकमात्र कारक नहीं हैं। समाज में संगठित होकर लोग संयुक्त रूप से उत्पादन करने में सक्षम होते हैं। मार्क्स के अनुसार, उत्पादन के लिए लोग एक-दूसरे के साथ निश्चित संबंध बनाते हैं। इन सामाजिक संबंधों के अंतर्गत ही उत्पादन होता है।
- मार्क्स के अनुसार उत्पादन के संबंध या उत्पादन के सामाजिक संबंध, उत्पादन के किसी भी तरीके में दो प्रकार के होते हैं -



RELATIONS BETWEEN MAN AND MAN (मनुष्य और मनुष्य के बीच संबंध) –

They pertain to the associations which individuals form in order to undertake production. These associations also lead to stratification and formulation of 'classes' depending upon different positions in the production process. Broadly, there are two classes – 'the haves' – who own the production and earn profit or benefits, and 'the have nots' – who sell their labor and earn wages in an industrial society. Nature of these relations is in form of 'antagonistic cooperation'. This is because of an essential contradiction between the interests of the two classes.

B – the haves
P – the have not
Production

वे उन संघों से संबंधित हैं जो व्यक्ति उत्पादन करने के लिए बनाते हैं। ये संघ उत्पादन प्रक्रिया में विभिन्न स्थितियों के आधार पर स्तरीकरण और 'वर्गों' के निर्माण का भी नेतृत्व करते हैं। मोटे तौर पर, दो वर्ग हैं – 'धनवान' – जो उत्पादन के मालिक हैं और लाभ या लाभ कमाते हैं, और 'वंचित' – जो अपना श्रम बेचते हैं और एक औद्योगिक समाज में मजदूरी कमाते हैं। इन संबंधों की प्रकृति 'विरोधी सहयोग' के रूप में है। इसका कारण दोनों वर्गों के हितों के बीच एक आवश्यक विरोधाभास है।

2. RELATIONS BETWEEN MAN AND THINGS –

They are of nature of 'ownership' and 'non-ownership' of things required in the production. 'The haves' own the production process in a capitalist society, whereas 'the have nots' are non-owners in the production process and just own their own labor. Man is free to sell his labor in an industrial society. Similarly, in other societies or mode of productions, ownership and non-ownership relations exist.

2. मनुष्य और वस्तुओं के बीच संबंध -

वे उत्पादन में आवश्यक चीज़ों के 'स्वामित्व' और 'गैर-स्वामित्व' की प्रकृति के होते हैं। पूंजीवादी समाज में 'धनवानों' के पास उत्पादन प्रक्रिया का स्वामित्व होता है, जबकि 'जिनके पास नहीं है' वे उत्पादन प्रक्रिया में गैर-स्वामी होते हैं और केवल अपने स्वयं के श्रम के स्वामी होते हैं। औद्योगिक समाज में मनुष्य अपना श्रम बेचने के लिए स्वतंत्र है। इसी प्रकार, अन्य समाजों या उत्पादन के तरीकों में, स्वामित्व और गैर-स्वामित्व संबंध मौजूद हैं।

Alienation

- According to Marx, these relations are dynamic. Antagonism keeps on increasing resulting into conflict between the two classes. Similarly, the relationship between man and things also keeps on changing. In a capitalist society, Marx foresees such a degree of exploitation that the man loses control over its own labor also. According to Marx, these social relationships determine the existence of man and not his own will.
- मार्क्स के अनुसार ये संबंध गतिशील हैं। विरोध बढ़ता जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप दोनों वर्गों के बीच संघर्ष हो रहा है। इसी प्रकार मनुष्य और वस्तुओं का सम्बन्ध भी बदलता रहता है। मार्क्स पूंजीवादी समाज में इस हद तक शोषण की भविष्यवाणी करते हैं कि मनुष्य अपने श्रम पर भी नियंत्रण खो देता है। मार्क्स के अनुसार, ये सामाजिक रिश्ते मनुष्य के अस्तित्व को निर्धारित करते हैं, न कि उसकी अपनी इच्छा को।

- According to Marx, 'It is not the consciousness of men that determines their being, but, on the contrary, their **social being determines their consciousnesses**' i.e. men themselves don't decide what type of social relations (in production process) they will have, rather social relations determine who they will be – the ruled or the ruler.
- मार्क्स के अनुसार, 'यह मनुष्यों की चेतना नहीं है जो उनके अस्तित्व को निर्धारित करती है, बल्कि, इसके विपरीत, उनका **सामाजिक अस्तित्व उनकी चेतना को निर्धारित करता है**' अर्थात् मनुष्य स्वयं यह तय नहीं करते हैं कि (उत्पादन प्रक्रिया में) उनके किस प्रकार के सामाजिक संबंध होंगे बल्कि सामाजिक रिश्ते यह निर्धारित करते हैं कि वे कौन होंगे - शासित या शासक।

- ❑ Both the forces and relations of production change continuously and together the two constitute 'economic base' or 'infrastructure' of society. This constant interplay results into a particular type of social formation which is 'mode of production' or society or social formation according to Marx.
- ❑ Marx had a systemic view of society and he deemed 'production as central in understanding the society'. The forces and relations of production continuously interplay and influence each other. According to his systemic view, society or mode of production consists of two parts –
- ❑ उत्पादन की शक्तियाँ और संबंध दोनों निरंतर बदलते रहते हैं और दोनों मिलकर समाज का 'आर्थिक आधार' या 'बनियादी ढाँचा' बनाते हैं। इस निरंतर अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप एक विशेष प्रकार का सामाजिक गठन होता है जो मार्क्स के अनुसार 'उत्पादन का तरीका' या समाज या सामाजिक गठन है।
- ❑ मार्क्स का समाज के प्रति एक व्यवस्थित दृष्टिकोण था और उन्होंने 'समाज को समझने में उत्पादन को केंद्रीय' माना। उत्पादन की शक्तियाँ और संबंध लगातार एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। उनके प्रणालीगत दृष्टिकोण के अनुसार, समाज या उत्पादन प्रणाली के दो भाग होते हैं -

1. ECONOMIC INFRASTRUCTURE – It includes 'forces' and 'relations' i.e. man and things being involved in production including classes, tools, techniques etc.

Capital

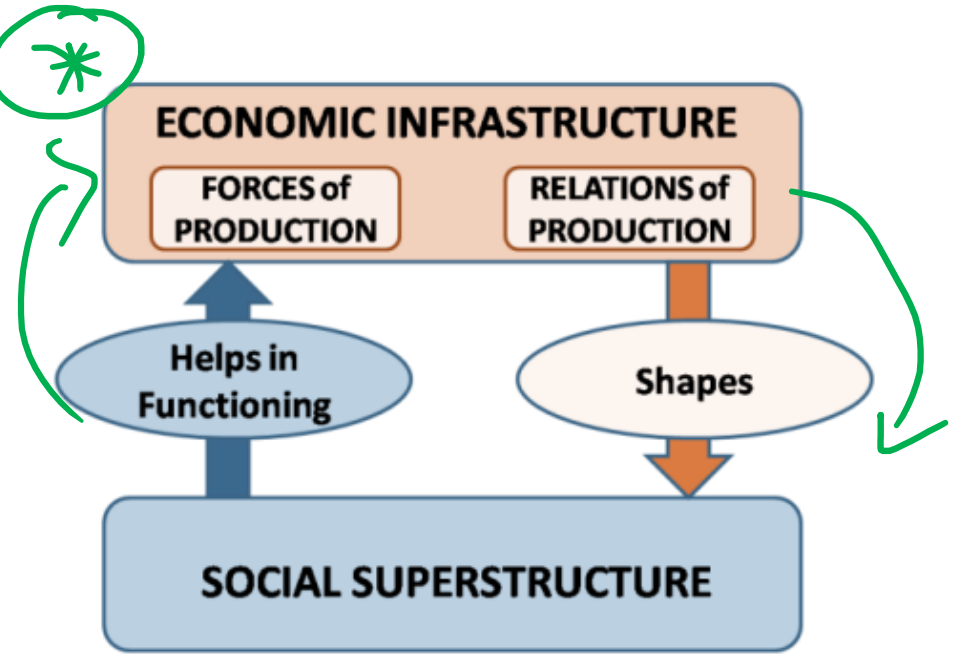
2. SOCIAL SUPERSTRUCTURE – It includes all other aspects of society like – culture, law, state, family, religion, education etc and it is largely shaped by economic infrastructure. As economic infrastructure changes, social superstructure also change.

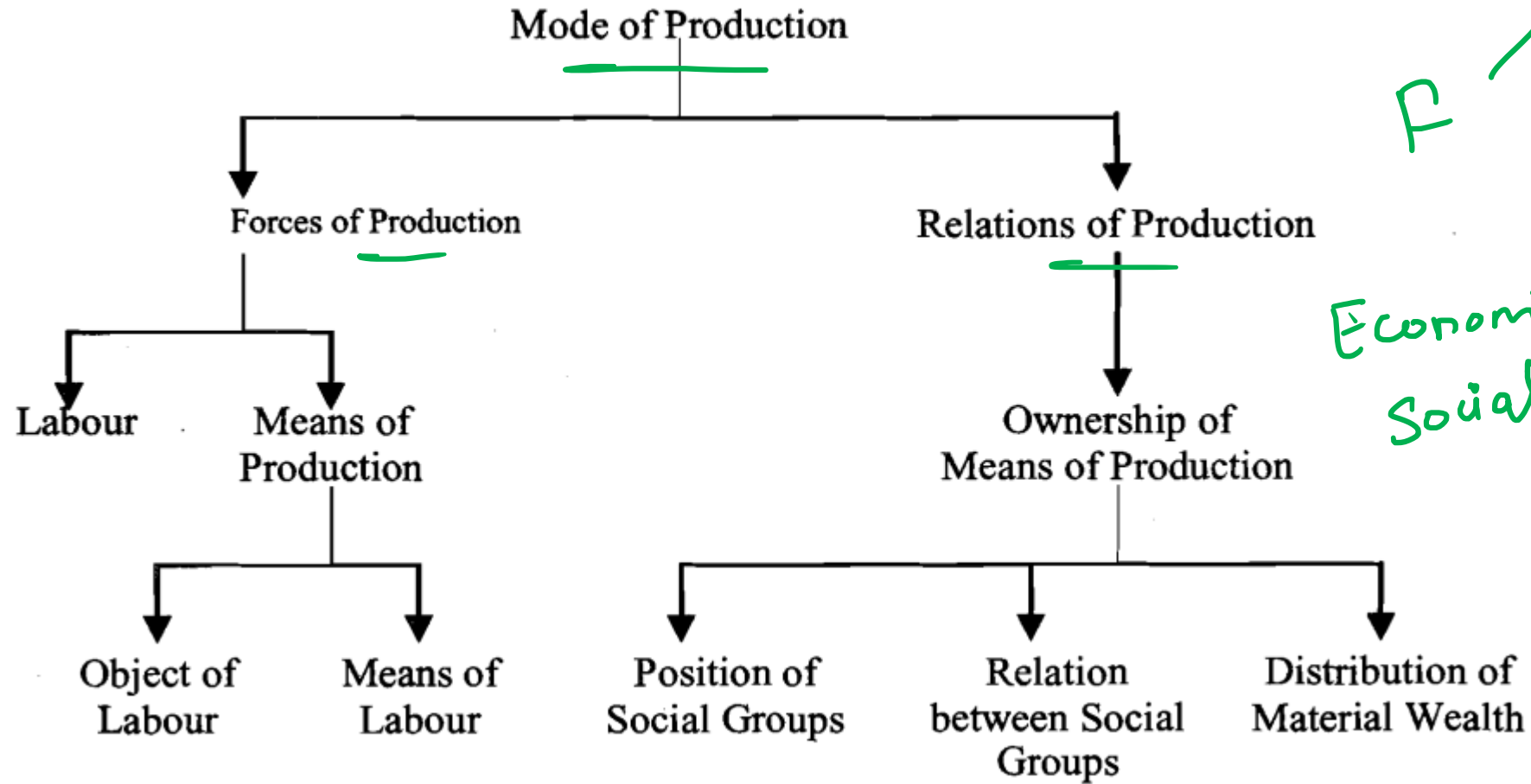
1. आर्थिक बुनियादी ढांचा - इसमें 'बल' और 'संबंध' शामिल हैं यानी मनुष्य और उत्पादन में शामिल चीजें जिनमें वर्ग, उपकरण, तकनीक आदि शामिल हैं।

2. सामाजिक अधिरचना - इसमें समाज के अन्य सभी पहलू शामिल हैं जैसे - संस्कृति, कानून, राज्य, परिवार, धर्म, शिक्षा आदि और यह काफी हद तक आर्थिक बुनियादी ढांचे से आकार लेता है। जैसे-जैसे आर्थिक बुनियादी ढाँचा बदलता है, सामाजिक अधिरचना भी बदलती है।

❖ Economic infrastructure shapes social superstructure which in turns helps in functioning of economic infrastructure. Thus, nature of forces and relations of production will result in similar superstructure and consequently a typical organization of society will emerge.

❖ आर्थिक बुनियादी ढाँचा सामाजिक अधिरचना को आकार देता है जो बदले में आर्थिक बुनियादी ढाँचे के कामकाज में मदद करता है। इस प्रकार, शक्तियों की प्रकृति और उत्पादन संबंधों के परिणामस्वरूप समान अधिरचना का निर्माण होगा और परिणामस्वरूप समाज का एक विशिष्ट संगठन उभरेगा।





MOP
F R
mym mgt
Economic In
Social Super.

❑ Marx has conceptualised the society in terms of **six stages or six modes of production**. Every new mode of production displaces the earlier one because of various factors like – inherent weaknesses of the system, contradictions, class struggle etc. A revolution is often required to change the relations of production. **Out of six modes, four are historical and two are futuristic**, historical stages include –

Sequence

❑ मार्क्स ने समाज की अवधारणा **छह चरणों** या उत्पादन के छह तरीकों के आधार पर की है। उत्पादन का प्रत्येक नया तरीका विभिन्न कारकों जैसे - व्यवस्था की अंतर्निहित कमजोरियों, विरोधाभासों, **वर्ग संघर्ष** आदि के कारण पहले वाले को विस्थापित कर देता है। उत्पादन के संबंधों को बदलने के लिए अक्सर क्रांति की आवश्यकता होती है। **छह विधाओं में से चार ऐतिहासिक हैं और दो भविष्यवादी हैं**, ऐतिहासिक चरणों में शामिल हैं -

① Primitive Communism/
Tribal

↓
② Slavery

↓
③ Feudal

↓
④ Capitalistic

↓
⑤ Socialistic

↓
⑥ Communism

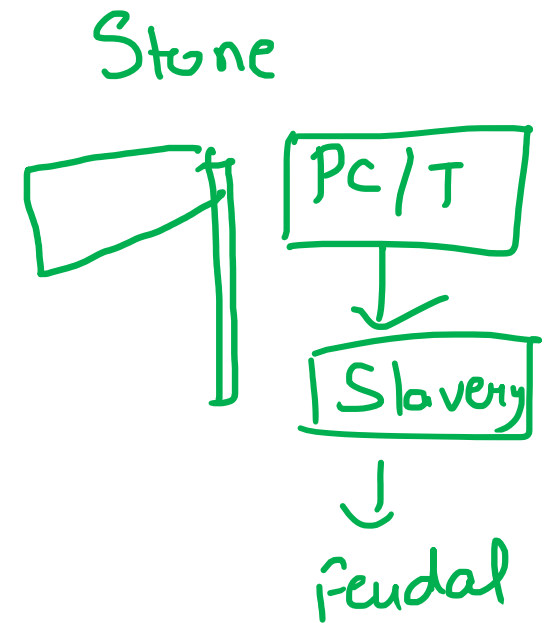
1. PRIMITIVE COMMUNISM / TRIBAL –

In this mode of production, all are equal and have equal access to forces of production and society is **hunting gathering society**. Forces of production are at extremely low level and there was equality in society as food is also abundant as population is low. Relations of production were based upon cooperation, rather than domination as ownership of forces of production was communal.

1. आदिम साम्यवाद/आदिवासी-

उत्पादन की इस पद्धति में, सभी समान हैं और उत्पादन की शक्तियाँ तक उनकी समान पहुंच है और **समाज शिकार इकट्ठा करने वाला समाज** है। उत्पादन की शक्तियाँ अत्यंत निम्न स्तर पर थीं और समाज में समानता थी क्योंकि जनसंख्या कम होने के कारण भोजन भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। उत्पादन के संबंध वर्चस्व के बजाय सहयोग पर आधारित थे क्योंकि उत्पादन की शक्तियों का स्वामित्व सांप्रदायिक था।

- With invention of new tools, forces became sophisticated. Communal structure of society starts to break up as new form of social organization emerge with emergence of private ownership. This leads to conflicts and contradiction between erstwhile mode of production and emerging new mode of production which is termed as 'negation of primitive communism'. Those who held command over tools emerged as 'masters' and those who became dependent became 'slaves' in new mode of production.



- नए उपकरणों के आविष्कार से सेनाएँ परिष्कृत हो गईं। निजी स्वामित्व के उद्भव के साथ सामाजिक संगठन के नए स्वरूप के उभरने से समाज की सांप्रदायिक संरचना टूटने लगती है। इससे उत्पादन की पूर्ववर्ती पद्धति और उभरती नई उत्पादन पद्धति के बीच संघर्ष और विरोधाभास पैदा होता है जिसे 'आदिम साम्यवाद का निषेध' कहा जाता है। जिन लोगों के पास औजारों पर नियंत्रण था वे 'मालिक' के रूप में उभरे और जो लोग आश्रित हो गए वे उत्पादन की नई विधा में 'गुलाम' बन गए।

2. ANCIENT SLAVE MODE OF PRODUCTION – Slavery

Masters

In this mode, some men have control over skills and tools and others were subordinate to them. This mode symbolises ancient slavery in which slaves didn't have control on their labor also. As population further increases, slaves are pressurised to produce more and more and their exploitation increases and slave revolt. New forces of production emerge in form of agriculture and feudalsim emerges.

2. उत्पादन की प्राचीन दास पद्धति -

इस विधा में, कुछ पुरुषों का कौशल और उपकरणों पर नियंत्रण होता था और अन्य उनके अधीन होते थे। यह विधा प्राचीन दासता का प्रतीक है जिसमें दासों का अपने श्रम पर भी नियंत्रण नहीं होता था। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती है, दासों पर अधिक से अधिक उत्पादन करने का दबाव पड़ता है और उनका शोषण बढ़ता है और दास विद्रोह करते हैं। कृषि के रूप में उत्पादन की नई शक्तियाँ उभरीं और सामंतवाद का उदय हुआ।

3. FEUDALISM –

In this mode, land was central to economic activity and feudal lords were in control of land and serfs were dependent on feudal lords. In this mode of production, erstwhile masters become feudal lords controlling the land and slaves become serfs.

Serfs were free, but were forced to cultivate on land of feudal lords and have to pay tax and service which kept on rising leading to revolt of serfs when mature conditions arrived. New mode of production in form of capitalism emerged with increase in trade and erstwhile feudal lords became capitalists and serf became workers in factories.

3. सामंतवाद -

इस पद्धति में, भूमि आर्थिक गतिविधि का केंद्र थी और सामंती प्रभु भूमि पर नियंत्रण रखते थे और भूदास सामंती प्रभुओं पर निर्भर थे। उत्पादन की इस पद्धति में, पूर्ववर्ती स्वामी भूमि को नियंत्रित करने वाले सामंती प्रभु बन जाते हैं और दास भूदास बन जाते हैं।

सर्फ स्वतंत्र थे, लेकिन उन्हें सामंती प्रभुओं की भूमि पर खेती करने के लिए मजबूर किया गया और उन्हें कर और सेवा का भुगतान करना पड़ा, जो बढ़ता गया और परिपक्व परिस्थितियाँ आने पर सर्फों ने विद्रोह कर दिया। व्यापार में वृद्धि के साथ पूंजीवाद के रूप में उत्पादन की नई पद्धति का उदय हुआ और पूर्ववर्ती सामंत पूंजीवादी बन गए और भूदास कारखानों में श्रमिक बन गए।

4. CAPITALISM –

In this mode of production, capital was central to production and society is primarily divided into proletariat and bourgeoisie. Marx argued that capital produces nothing. Only labor produces wealth, yet wages paid are too low. The difference between the two is the 'surplus' which is gobbled up by capitalists. Workers lose control over their labor as well and start feeling alienated.

workers

4. पूंजीवाद -

उत्पादन की इस पद्धति में, पूंजी उत्पादन के केंद्र में थी और समाज मुख्य रूप से सर्वहारा और बुर्जुआ में विभाजित था। मार्क्स ने तर्क दिया कि पूंजी कुछ भी पैदा नहीं करती। केवल श्रम ही धन पैदा करता है, फिर भी भुगतान की जाने वाली मजदूरी बहुत कम है। दोनों के बीच का अंतर 'अधिशेष' है जिसे पूंजीपति हड़प लेते हैं। श्रमिक अपने श्रम पर भी नियंत्रण खो देते हैं और अलग-थलग महसूस करने लगते हैं।

- The most significant contradictions that leads to class conflict in capitalist society is – contradiction between the social character of production and private capitalist form of appropriation. It leads to conflict and exploited workers will unite and revolt heralding new mode of production – socialism eventually leading to communism.
- पूंजीवादी समाज में वर्ग संघर्ष को जन्म देने वाला सबसे महत्वपूर्ण विरोधाभास है - उत्पादन के सामाजिक चरित्र और विनियोग के निजी पूंजीवादी स्वरूप के बीच विरोधाभास। इससे संघर्ष पैदा होगा और शोषित श्रमिक एकजुट होकर विद्रोह करेंगे और उत्पादन के नए तरीके की शुरुआत करेंगे - समाजवाद जो अंततः साम्यवाद की ओर ले जाएगा।

5. SOCIALISM – Futuristic

It is a transitory mode of production in which **proletariat will topple bourgeoisie** in a revolution and will control forces of production. Marx calls it as 'dictatorship of proletariat' as, for a short while, worker controls the forces of production.

5. समाजवाद -

यह उत्पादन का एक अस्थायी तरीका है जिसमें **सर्वहारा वर्ग एक क्रांति में बुर्जुआ को उखाड़ फेंकेगा** और उत्पादन की शक्तियों को नियंत्रित करेगा। मार्क्स इसे 'सर्वहारा वर्ग की तानाशाही' कहते हैं, क्योंकि थोड़े समय के लिए श्रमिक उत्पादन की शक्तियों को नियंत्रित करता है।

6. ADVANCED COMMUNISM –

Sequence

It is the final mode in which **forces of production will be communally owned** as workers too renounce their rule and everyone will carry on his own creative pursuit and there will be no class in society. There will be no state and a person's true self or being will be re-integrated with oneself. According to Marx, this will be the last mode of production as the contradiction will be resolved in it and hence there will not be any new relations of production.

6. उन्नत साम्यवाद -

यह अंतिम तरीका है जिसमें **उत्पादन की शक्तियों पर सामुदायिक स्वामित्व होगा** क्योंकि श्रमिक भी अपने शासन को त्याग देंगे और हर कोई अपनी रचनात्मक खोज करेगा और समाज में कोई वर्ग नहीं होगा। कोई राज्य नहीं होगा और व्यक्ति का सच्चा स्व या अस्तित्व स्वयं के साथ पुनः एकीकृत हो जाएगा। मार्क्स के अनुसार, यह उत्पादन का अंतिम तरीका होगा क्योंकि इसमें विरोधाभास का समाधान हो जाएगा और इसलिए उत्पादन के कोई नए संबंध नहीं होंगे।

- In this mode of production, collective production will remain, but the qualitative nature of relations will be transformed and ownership will also be now collective. Dialectical principle will cease to operate in this mode of production and this stage will be a closing chapter of dialectical materialism.

- इस उत्पादन पद्धति में सामूहिक उत्पादन तो रहेगा ही, संबंधों की गुणात्मक प्रकृति भी बदल जायेगी और स्वामित्व भी अब सामूहिक हो जायेगा। उत्पादन की इस पद्धति में द्वंद्वात्मक सिद्धांत काम करना बंद कर देगा और यह चरण द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का समापन अध्याय होगा।

ASIATIC MODE OF PRODUCTION-

- It was referred by Marx to explain the stagnation of oriental societies. It was a departure from his dialectical materialistic and evolutionary conception.
- It was characterised by simple production methods, despotic rule, self-sufficient villages, absence of private property, economy based on handicraft and agriculture and absence of autonomous cities.

उत्पादन की एशियाई विधि-

- इसका उल्लेख मार्क्स ने प्राच्य समाजों के ठहराव को समझाने के लिए किया था। यह उनकी द्वंद्ववात्मक भौतिकवादी और विकासवादी अवधारणा से विचलन था।
- इसकी विशेषताएँ सरल उत्पादन पद्धतियाँ, निरंकुश शासन, आत्मनिर्भर गाँव, निजी संपत्ति का अभाव, हस्तशिल्प और कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था और स्वायत्त शहरों का अभाव था।

- As there was no private property, there was no class struggle based upon antagonism between land lords and peasants.
- As these societies lacked in the dynamics of class struggle, there was also a little hope of revolution.
- चूंकि वहां कोई निजी संपत्ति नहीं थी, इसलिए जमींदारों और किसानों के बीच विरोध पर आधारित कोई वर्ग संघर्ष नहीं था।
- चूंकि इन समाजों में वर्ग संघर्ष की गतिशीलता का अभाव था, इसलिए क्रांति की थोड़ी उम्मीद भी थी।



MARX on INDIVIDUAL

According to Marx, man is perpetually dissatisfied, he creates new needs once existing needs are satisfied. Marx, however, sees man as driven by structure of society and subordinate to it. Individual consciousness is shaped by the production process. Consciousness is a function of the person's position in the production process i.e. forces and relations of production influence human thoughts. Marx' view on individual are further elaborated in his idea of 'being'. According to him, there two essential aspects of human nature, first which is constant and other which changes with changes in production.

व्यक्तिगत पर मार्क्स

मार्क्स के अनुसार, मनुष्य सदैव असंतुष्ट रहता है, मौजूदा जरूरतें पूरी होने के बाद वह नई जरूरतें पैदा करता है। हालाँकि, मार्क्स मनुष्य को समाज की संरचना से संचालित और उसके अधीन देखता है। व्यक्तिगत चेतना उत्पादन प्रक्रिया द्वारा आकार लेती है। चेतना उत्पादन प्रक्रिया में व्यक्ति की स्थिति का एक कार्य है अर्थात् उत्पादन की शक्तियाँ और संबंध मानव विचारों को प्रभावित करते हैं। व्यक्ति के बारे में मार्क्स के दृष्टिकोण को उनके 'अस्तित्व' के विचार में और अधिक विस्तृत किया गया है। उनके अनुसार, मानव स्वभाव के दो आवश्यक पहलू हैं, पहला जो स्थिर है और दूसरा जो उत्पादन में परिवर्तन के साथ बदलता है।

1. The constant part is called 'being' and is perpetually dissatisfied and creative. Man tends to create things which are expression of his creativity. Once the society limits the creativity of individual, he feels alienated.

2. The other part of human nature is governed by a person's social position. This is referred as 'social being'. It is identified by the work done by the individual. In the existing societies, man is identified by his 'social being' and not by his 'being'. Similarly, in existing societies, individual consciousness is determined by his 'social being', rather than his 'being'.

HM
Being social being

1. स्थिर भाग को 'होना' कहा जाता है और यह सतत असंतुष्ट और रचनात्मक है। मनुष्य ऐसी चीजें बनाता है जो उसकी रचनात्मकता की अभिव्यक्ति होती हैं। एक बार जब समाज व्यक्ति की रचनात्मकता को सीमित कर देता है, तो वह अलग-थलग महसूस करता है।

2. मानव स्वभाव का दूसरा भाग व्यक्ति की सामाजिक स्थिति से संचालित होता है। इसे 'सामाजिक प्राणी' कहा जाता है। इसकी पहचान व्यक्ति द्वारा किये गये कार्यों से होती है। मौजूदा समाजों में मनुष्य की पहचान उसके 'सामाजिक अस्तित्व' से होती है न कि उसके 'अस्तित्व' से। इसी प्रकार, मौजूदा समाजों में, व्यक्तिगत चेतना उसके 'अस्तित्व' के बजाय उसके 'सामाजिक अस्तित्व' से निर्धारित होती है।

ALIENATION

Marx believed that there is an inherent relation between labor and human nature and that this relation is perverted by capitalism. He calls this perverted relation as 'alienation'. It explains the peculiar form that our relation to our own labor has taken under capitalism and labor in capitalism is no longer seen as serving purpose of human existence. Rather than being an end in itself – an expression of human capabilities – labor in capitalism is reduced to being a means to an end i.e. earning money for the capitalists.

Pot

Production
Process X



अलगाव की भावना

मार्क्स का मानना था कि श्रम और मानव स्वभाव के बीच एक अंतर्निहित संबंध है और यह संबंध पूंजीवाद द्वारा विकृत है। इस विकृत रिश्ते को वह 'अलगाव' कहते हैं। यह बताता है कि पूंजीवाद के तहत हमारे अपने श्रम के साथ हमारे संबंध ने कितना अजीब रूप धारण कर लिया है और पूंजीवाद में श्रम को अब मानव अस्तित्व के उद्देश्य की पूर्ति के रूप में नहीं देखा जाता है। पूंजीवाद में श्रम अपने आप में एक लक्ष्य होने के बजाय - मानवीय क्षमताओं की अभिव्यक्ति - केवल साध्य का एक साधन बनकर रह गया है, यानी पूंजीपतियों के लिए पैसा कमाना।

- Labor is now owned by the capitalist, it no longer transforms the workers, they get alienated from it and ultimately from themselves. Alienation is an example of the sort of contradiction that Marx's dialectical approach focused on. There is a real contradiction between human nature – which is defined and transformed by labor – and the actual social conditions of labor under capitalism. Thus, Marx uses this concept to show the devastating effect of the capitalist production on human beings and on the society.
- श्रम अब पूंजीपति के स्वामित्व में है, यह अब श्रमिकों को नहीं बदलता है, वे इससे और अंततः खुद से अलग हो जाते हैं। अलगाव उस तरह के विरोधाभास का एक उदाहरण है जिस पर मार्क्स का द्वंद्ववात्मक दृष्टिकोण केंद्रित था। मानव स्वभाव - जो श्रम द्वारा परिभाषित और परिवर्तित होता है - और पूंजीवाद के तहत श्रम की वास्तविक सामाजिक स्थितियों के बीच एक वास्तविक विरोधाभास है। इस प्रकार, मार्क्स इस अवधारणा का उपयोग मनुष्य और समाज पर पूंजीवादी उत्पादन के विनाशकारी प्रभाव को दिखाने के लिए करते हैं।

- Concept of alienation occupies a central role in Marxian understanding of exploitation and he dwell on it in his works 'Economic and Political Manuscripts, 1844'. Alienation literally means separation from. Marx sees this separation in multiple dimensions. It is a feeling of estrangement and disenchantment from a group, a situation, society and even with oneself.
- शोषण की मार्क्सवादी समझ में अलगाव की अवधारणा एक केंद्रीय भूमिका निभाती है और उन्होंने अपने कार्यों 'इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल मैनुस्क्रिप्ट्स, 1844' में इस पर प्रकाश डाला है। अलगाव का शाब्दिक अर्थ है अलग होना। मार्क्स इस अलगाव को कई आयामों में देखते हैं। यह एक समूह, एक स्थिति, समाज और यहां तक कि स्वयं से अलगाव और मोहभंग की भावना है।

- It also refers to a situation of powerlessness, isolation and meaninglessness experienced by the people when they confront social institutions which they cannot control and consider oppressive. it is the breakdown of the natural interconnection among people and what they produce.
- Marx gives primary importance to alienation at workplace as it is part of economic infrastructure which shapes the superstructure. Work is considered central in the life of individual – it is an expression of creative 'being' of men. So, alienation of labor is key to alienation of human beings.
- यह लोगों द्वारा अनुभव की जाने वाली शक्तिहीनता, अलगाव और अर्थहीनता की स्थिति को भी संदर्भित करता है जब वे उन सामाजिक संस्थाओं का सामना करते हैं जिन्हें वे नियंत्रित नहीं कर सकते हैं और दमनकारी मानते हैं। यह लोगों और वे जो उत्पादन करते हैं उनके बीच प्राकृतिक अंतर्संबंध का टूटना है।
- मार्क्स कार्यस्थल पर अलगाव को प्राथमिक महत्व देते हैं क्योंकि यह आर्थिक बुनियादी ढांचे का हिस्सा है जो अधिरचना को आकार देता है। व्यक्ति के जीवन में काम को केंद्रीय माना जाता है - यह मनुष्य के रचनात्मक 'अस्तित्व' की अभिव्यक्ति है। इसलिए, श्रम का अलगाव मानव के अलगाव की कुंजी है।

Alienation happens in two ways –

I. In a given mode of production, it increases with time. This is because material forces become stronger and control over forces of production becomes tighter leading to increasing exploitation. For example – slaves in Ancient mode of production become more alienated as they are burdened with more work and less food. Similarly, in feudalism also, taxes and hardship on serfs increases with time.

अलगाव दो प्रकार से होता है -

I. उत्पादन के किसी दिए गए तरीके में, यह समय के साथ बढ़ता है। इसका कारण यह है कि भौतिक शक्तियाँ मजबूत हो जाती हैं और उत्पादन की शक्तियों पर नियंत्रण सख्त हो जाता है जिससे शोषण बढ़ जाता है। उदाहरण के लिए - उत्पादन की प्राचीन पद्धति में दास अधिक अलग-थलग हो जाते हैं क्योंकि उन पर अधिक काम और कम भोजन का बोझ होता है। इसी प्रकार, सामंतवाद में भी, समय के साथ सफ़ाई पर कर और कठिनाई बढ़ती जाती है।

II. Its degree increases as mode of production itself changes.

Marx says, 'History of mankind is a history of alienation'. It is least in primitive communism and peaks in capitalism and work becomes a suffering in capitalism.

II. जैसे-जैसे उत्पादन का तरीका बदलता है, इसकी डिग्री बढ़ती जाती है। मार्क्स कहते हैं, 'मानव जाति का इतिहास अलगाव का इतिहास है।' यह आदिम साम्यवाद में सबसे कम और पूंजीवाद में चरम पर होता है और पूंजीवाद में काम कष्टकारी हो जाता है।

Marx considers four dimensions of alienation in capitalism –

I. ALIENATION FROM THE PROCESS OF PRODUCTION –

Process of production is defined irrespective of individuality of workers. It is fixed and workers cannot change it. Workers only man the machines which are given more importance. Worker loses control over production

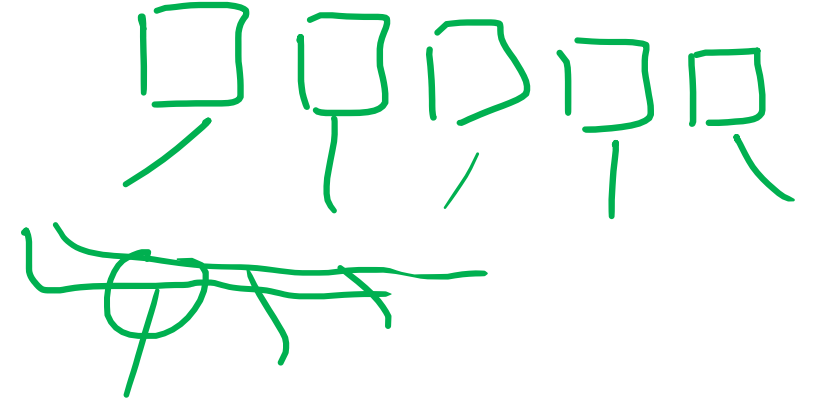
माक्स पूंजीवाद में अलगाव के चार आयाम मानते हैं -

I. उत्पादन की प्रक्रिया से अलगाव - उत्पादन की प्रक्रिया को श्रमिकों की वैयक्तिकता की परवाह किए बिना परिभाषित किया गया है। यह निश्चित है और कर्मचारी इसे बदल नहीं सकते। श्रमिक केवल उन्हीं मशीनों को चलाते हैं जिन्हें अधिक महत्व दिया जाता है। श्रमिक उत्पादन पर नियंत्रण खो देता है

II. ALIENATION FROM THE PRODUCT – In capitalism, product doesn't belong to those who produce it, but to capitalist. Workers don't have any control over quantity, quality or nature of the product. Moreover, same product has to be purchased from the market leading to sense of alienation from the product.

II. उत्पाद से अलगाव - पूंजीवाद में, उत्पाद उन लोगों का नहीं होता जो इसे पैदा करते हैं, बल्कि पूंजीपति का होता है। श्रमिकों का उत्पाद की मात्रा, गुणवत्ता या प्रकृति पर कोई नियंत्रण नहीं होता है। इसके अलावा, वहीं उत्पाद बाजार से खरीदना पड़ता है जिससे उत्पाद से अलगाव की भावना पैदा होती है।

III. ALIENATION FROM THE FELLOW WORKERS – Work is compartmentalized and a worker gets no time to interact with others, either inside or outside the workplace.



III. साथी श्रमिकों से अलगाव - काम को विभाजित कर दिया गया है और एक कार्यकर्ता को कार्यस्थल के अंदर या बाहर, दूसरों के साथ बातचीत करने का समय नहीं मिलता है।



IV. ALIENATION FROM ONESELF AND ONE'S POTENTIAL – In such a situation worker feels so helpless that they even doubt their own existence. Work is not a choice, but a compulsion. 'Work is external to the worker, it is not a part of his nature'. He loses control over his own thoughts also, as none of his thoughts can be transformed into reality. He gets alienated from his thoughts also. This is peak of alienation.

④ Dimensions

IV. स्वयं और अपनी क्षमता से अलगाव - ऐसी स्थिति में कार्यकर्ता इतना असहाय महसूस करता है कि उसे अपने अस्तित्व पर भी संदेह होता है। काम कोई विकल्प नहीं बल्कि मजबूरी है। 'कार्य कार्यकर्ता के लिए बाहरी है, यह उसके स्वभाव का हिस्सा नहीं है।' वह अपने विचारों पर भी नियंत्रण खो देता है, क्योंकि उसका कोई भी विचार हकीकत में नहीं बदल पाता। वह अपने विचारों से भी विमुख हो जाता है। यह अलगाव का चरम है।

CLASS and SOCIETY

Class is central concept in Marxian writings to understand society as a whole. In his seminal work 'Das Capital, 1867' Marx writes that class results from the relations of production which create different positions and he defines it as 'A group of people sharing the same position in the process of production'. However, he saw a class more than this and he saw it in terms of potential for conflict and a class truly exists only when people become aware of their conflicting relation to other classes.

वर्ग और समाज

समाज को समग्र रूप से समझने के लिए मार्क्सवादी लेखन में वर्ग केंद्रीय अवधारणा है। अपने मौलिक कार्य 'दास कैपिटल, 1867' में मार्क्स लिखते हैं कि वर्ग उत्पादन के संबंधों से उत्पन्न होता है जो विभिन्न पदों का निर्माण करता है और वह इसे 'उत्पादन की प्रक्रिया में समान स्थिति साझा करने वाले लोगों का एक समूह' के रूप में परिभाषित करता है। हालाँकि, उन्होंने एक वर्ग को इससे भी अधिक देखा और उन्होंने इसे संघर्ष की संभावना के रूप में देखा और एक वर्ग वास्तव में तभी अस्तित्व में होता है जब लोग अन्य वर्गों के साथ अपने परस्पर विरोधी संबंध के बारे में जागरूक हो जाते हैं।

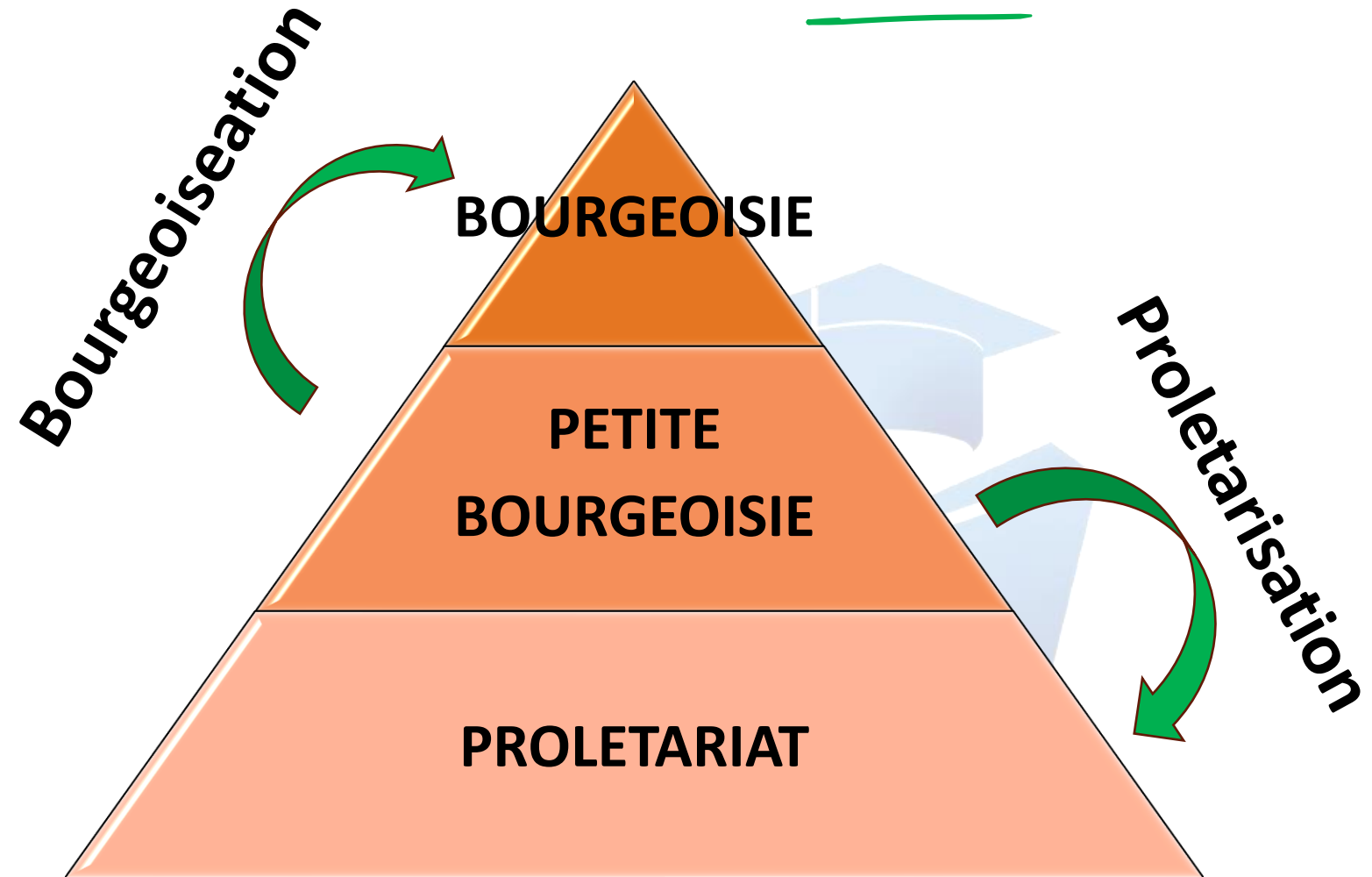
- Marx sees two broad classes in every society – the haves and the have nots. As mankind progressed from primitive communism, surplus started to emerge and some men started to control the forces of production and unequal relations of production emerged. This led to first class formation. In ancient society masters, in feudal society feudal lords and in capitalist society capitalists are 'the haves'. The haves are owners of forces of production and are dominant in society.

- मार्क्स हर समाज में दो व्यापक वर्ग देखते हैं - अमीर और गरीब। जैसे-जैसे मानव जाति आदिम साम्यवाद से आगे बढ़ी, अधिशेष उभरने लगा और कुछ लोगों ने उत्पादन की शक्तियों को नियंत्रित करना शुरू कर दिया और उत्पादन के असमान संबंध उभरे। इससे प्रथम श्रेणी का गठन हुआ। प्राचीन समाज में स्वामी, सामंती समाज में सामंत और पूंजीवादी समाज में पूंजीपति 'धनवान' होते हैं। अमीर लोग उत्पादन की शक्तियों के मालिक होते हैं और समाज में प्रभुत्व रखते हैं।



- Marx also talks of intermediate classes also. However, he contends that as history proceeds, all the intermediary classes will be absorbed into two broad strata through the process of 'class polarization'. Polarization involves two processes – Bourgeoisisation which involves upward mobility and proletarianisation which involves downward mobility. Polarization will occur with increasing exploitation and will also be accompanied by class antagonism or class struggle.
- मार्क्स मध्यवर्ती कक्षाओं की भी बात करते हैं। हालाँकि, उनका तर्क है कि जैसे-जैसे इतिहास आगे बढ़ेगा, सभी मध्यस्थ वर्ग 'वर्ग ध्रुवीकरण' की प्रक्रिया के माध्यम से दो व्यापक स्तरों में समाहित हो जाएँगे। ध्रुवीकरण में दो प्रक्रियाएँ शामिल हैं - बुर्जुआकरण जिसमें ऊपर की ओर गतिशीलता शामिल है और सर्वहाराकरण जिसमें नीचे की ओर गतिशीलता शामिल है। बढ़ते शोषण के साथ ध्रुवीकरण होगा और इसके साथ वर्ग विरोध या वर्ग संघर्ष भी होगा।

3 classes



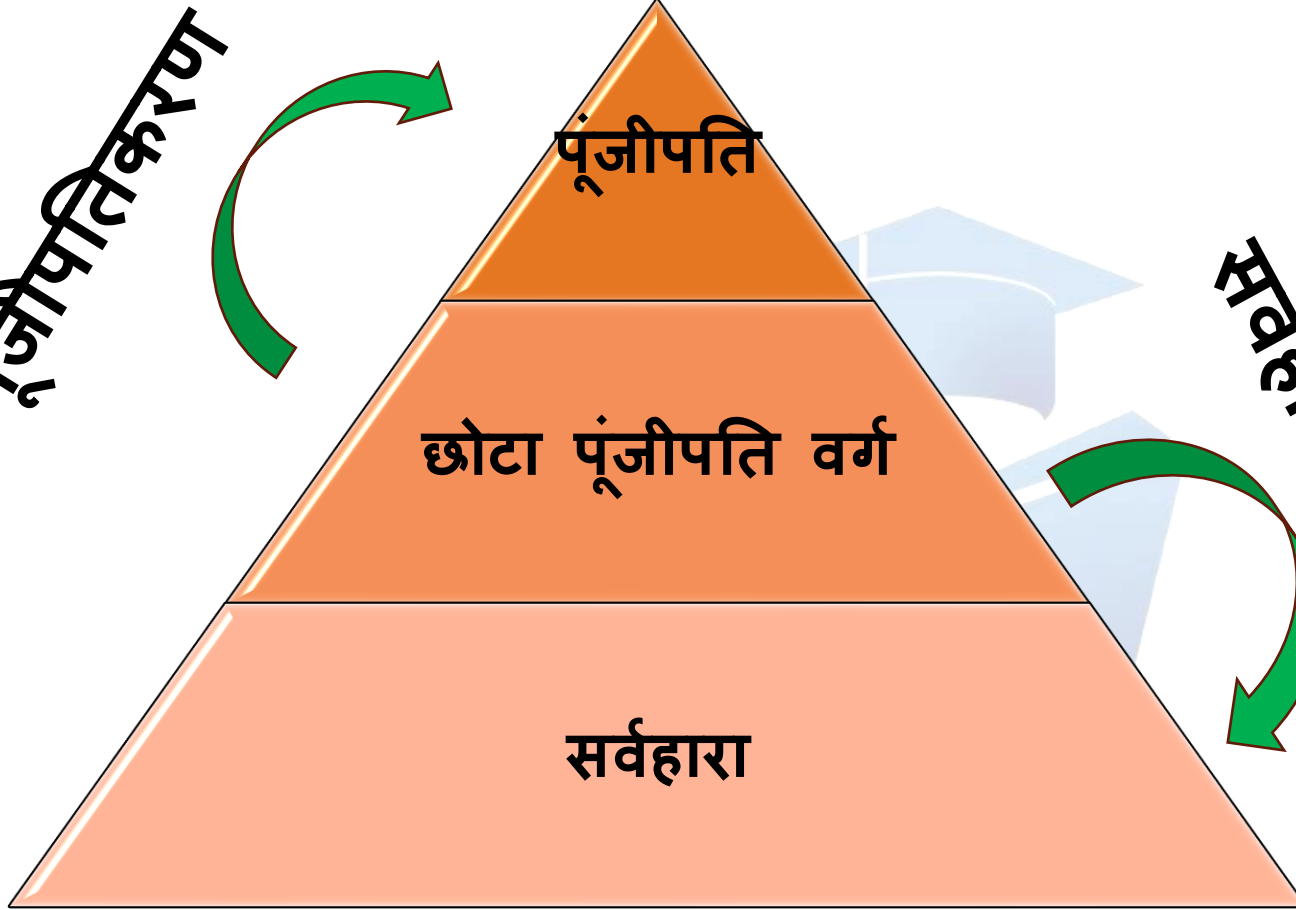
पूंजीपतिकरण

पूंजीपति

छोटा पूंजीपति वर्ग

सर्वहारा

सर्वहाराकरण



- Marx also sees class in terms of its objective and subjective expression in form of 'class in itself' and 'class for itself'. For Marx, a class truly exists only when people become aware of their conflicting relation to other classes. Without this awareness, they only constitute what Marx called a class in itself. When they become aware of the conflict, they become a true class, a class for itself.

Proletariat

- मार्क्स भी वर्ग को उसकी वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक अभिव्यक्ति के रूप में 'स्वयं में वर्ग' और 'स्वयं के लिए वर्ग' के रूप में देखता है। मार्क्स के लिए, एक वर्ग वास्तव में तभी अस्तित्व में होता है जब लोग अन्य वर्गों के साथ अपने परस्पर विरोधी संबंधों के बारे में जागरूक हो जाते हैं। इस जागरूकता के बिना, वे केवल वही बनाते हैं जिसे मार्क्स अपने आप में एक वर्ग कहते थे। जब वे संघर्ष के प्रति जागरूक हो जाते हैं, तो वे एक सच्चा वर्ग बन जाते हैं, अपने लिए एक वर्ग।

- **'Class in itself'** is the objective manifestation of class. It is like a 'category' which is seen by others as so and the members are not aware of being part of a common stratum. It is only an analytical construct to Marx in order to stratify position. It is by virtue of people having a common relationship to the means of production. It is solely defined by position in relations of production.
- **'वर्ग अपने आप में'** वर्ग की वस्तुनिष्ठ अभिव्यक्ति है। यह एक 'श्रेणी' की तरह है जिसे अन्य लोग उसी रूप में देखते हैं और सदस्यों को एक सामान्य तबके का हिस्सा होने के बारे में पता नहीं होता है। यह स्थिति को स्तरीकृत करने के लिए मार्क्स के लिए केवल एक विश्लेषणात्मक निर्माण है। यह उत्पादन के साधनों के साथ लोगों के सामान्य संबंध के कारण होता है। यह पूरी तरह से उत्पादन के संबंधों में स्थिति से परिभाषित होता है।

- For example – Proletariat are a class in itself because they have some common attribute like – lack of ownership of production means. A 'class in itself' becomes a 'class for itself' when the contradiction between the consciousness of its members and the reality of their situation ends.

X B
P

- उदाहरण के लिए - सर्वहारा अपने आप में एक वर्ग है क्योंकि उनमें कुछ सामान्य गुण होते हैं जैसे - उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व का अभाव। एक 'वर्ग अपने आप में एक वर्ग' बन जाता है जब उसके सदस्यों की चेतना और उनकी स्थिति की वास्तविकता के बीच विरोधाभास समाप्त हो जाता है।

- On the other hand, '**Class for itself**' is a class in which workers are aware of their common condition, their mission etc and develops only when class consciousness develops among workers themselves. They start to see through the condition of exploitation and can themselves realize the unequal terms of production.
- दूसरी ओर, '**स्वयं के लिए वर्ग**' एक ऐसा वर्ग है जिसमें श्रमिक अपनी सामान्य स्थिति, अपने मिशन आदि के बारे में जानते हैं और यह तभी विकसित होता है जब स्वयं श्रमिकों में वर्ग चेतना विकसित होती है। वे शोषण की स्थिति को समझना शुरू कर देते हैं और उत्पादन की असमान शर्तों को स्वयं महसूस कर सकते हैं।

- **CLASS CONSCIOUSNESS** is the self-understanding of the members of a social class. According to Marx, workers first become conscious of sharing common grievances against capitalists, thus forming a class in itself.
- This eventually develops an awareness of themselves as forming a social class opposed to the bourgeoisie, thus becoming a class for itself, known as proletariat. Class consciousness is a historical phenomena borne out of collective struggles.
- **वर्ग चेतना** एक सामाजिक वर्ग के सदस्यों की आत्म-समझ है। मार्क्स के अनुसार, श्रमिक सबसे पहले पूंजीपतियों के खिलाफ आम शिकायतों को साझा करने के प्रति जागरूक होते हैं, और इस प्रकार अपने आप में एक वर्ग बनाते हैं।
- यह अंततः पूंजीपति वर्ग के विरोध में एक सामाजिक वर्ग बनाने के बारे में जागरूकता विकसित करता है, इस प्रकार खुद के लिए एक वर्ग बन जाता है, जिसे सर्वहारा के रूप में जाना जाता है। वर्ग चेतना सामूहिक संघर्षों से उत्पन्न एक ऐतिहासिक घटना है।

- Transformation from 'class in itself' to 'class for itself' is governed by ever increasing exploitation, communal working in a factory and rising gap between the haves and the have nots. Polarization of two classes will further hasten process. Polarization will occur as a result of increasing mechanization and homogenization of workforce.

- 'स्वयं' में 'वर्ग' से 'स्वयं' के लिए 'वर्ग' में परिवर्तन लगातार बढ़ते शोषण, कारखाने में सांप्रदायिक कामकाज और अमीरों और गरीबों के बीच बढ़ती खाई से नियंत्रित होता है। दो वर्गों के ध्रुवीकरण से प्रक्रिया में और तेजी आएगी। बढ़ते मशीनीकरण और कार्यबल के समरूपीकरण के परिणामस्वरूप ध्रुवीकरण होगा।

- According to Marx, class in itself becomes a class for itself only in capitalist mode of production, as in earlier modes of production, change of mode of production resulted only in replacement of one set of contradiction by the other and no qualitative change in relationships of production occurs. Before communism arrives, 'class for itself' is merely transitory in nature as old contradiction is replaced with the new contradictions. Final transition of class in itself to class for itself occurs only in communism.
- मार्क्स के अनुसार, वर्ग अपने आप में केवल उत्पादन के पूंजीवादी तरीके में ही एक वर्ग बन जाता है, जैसा कि उत्पादन के पहले के तरीकों में होता था, उत्पादन के तरीके में बदलाव के परिणामस्वरूप केवल विरोधाभासों के एक सेट को दूसरे द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता था और संबंधों में कोई गुणात्मक परिवर्तन नहीं होता था। उत्पादन होता है। साम्यवाद आने से पहले, 'स्वयं' के लिए वर्ग प्रकृति में केवल क्षणभंगुर है क्योंकि पुराने विरोधाभासों को नए विरोधाभासों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है। अपने आप में वर्ग का अपने लिए वर्ग में अंतिम परिवर्तन केवल साम्यवाद में होता है।

CLASS STRUGGLE

Marx sees classes in society in terms of antagonistic cooperation. So, 'Class Struggle' is also inherent in Marxian conception of class. In each mode of production, the haves and the have nots enter into relations of production. Due to antagonistic cooperation, classes enter into struggle which keep on increasing. According to Marx – 'History of hitherto existing societies is history of class struggle'.

वर्ग संघर्ष

माक्स समाज में वर्गों को विरोधी सहयोग की दृष्टि से देखता है। तो, 'वर्ग संघर्ष' भी वर्ग की माक्सवादी अवधारणा में अंतर्निहित है। उत्पादन के प्रत्येक तरीके में, अमीर और गरीब उत्पादन संबंधों में प्रवेश नहीं करते हैं। विरोधी सहयोग के कारण वर्ग संघर्ष में उतर जाते हैं जो बढ़ता ही जाता है। माक्स के अनुसार - 'अब तक विद्यमान समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है।'

- He also states that – ‘Class struggle acts as motor of the history’ – i.e. conflict between the two classes in every mode of production is the force behind historical developments. New things and new modes of production emerge as a result of class struggle. Class struggle is not smooth and is mediated by a number of factors and situations. Forces of production keep on changing which require entirely new set of relations of production. Old relations come into conflict with new relations thereby contributing to class struggle.
- उनका यह भी कहना है कि - 'वर्ग संघर्ष इतिहास की मोटर के रूप में कार्य करता है' - यानी उत्पादन के हर तरीके में दो वर्गों के बीच संघर्ष ऐतिहासिक विकास के पीछे की शक्ति है। वर्ग संघर्ष के परिणामस्वरूप नई चीजें और उत्पादन के नए तरीके सामने आते हैं। वर्ग संघर्ष सहज नहीं है और कई कारकों और स्थितियों के कारण होता है। उत्पादन की शक्तियाँ बदलती रहती हैं जिसके लिए उत्पादन संबंधों के बिल्कुल नए सेट की आवश्यकता होती है। पुराने संबंधों का नए संबंधों से टकराव होता है जिससे वर्ग संघर्ष में योगदान होता है।

- For example – In feudal system, industrial production emerged which required geographically mobile labor, whereas agricultural production required people tied to their lands. Inherent contradiction in production process becomes a basis for class struggle. The interests of haves and the have nots are opposite leading to antagonistic relations. Increase in prices benefits only the capitalists and rise in wages is never proportionate.

- उदाहरण के लिए - सामंती व्यवस्था में, औद्योगिक उत्पादन का उदय हुआ जिसके लिए भौगोलिक दृष्टि से गतिशील श्रम की आवश्यकता थी, जबकि कृषि उत्पादन के लिए अपनी भूमि से बंधे लोगों की आवश्यकता थी। उत्पादन प्रक्रिया में अंतर्निहित अंतर्विरोध वर्ग संघर्ष का आधार बनता है। अमीरों और गरीबों के हित विपरीत हैं जिससे परस्पर विरोधी संबंध बनते हैं। कीमतों में वृद्धि से केवल पूंजीपतियों को लाभ होता है और मजदूरी में वृद्धि कभी भी आनुपातिक नहीं होती है।

- **“PAUPERIZATION** is the process by which the proletarians tend to grow poorer and poorer as the forces of production are developed.” Exploitation of the workers can only add to their misery and poverty. Marx says, “The wealth of bourgeoisie is swelled by large profits with corresponding increase in the mass of poverty; of pressure of slavery, of exploitation of the Proletariat.”
- **“गरीबीकरण** वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा उत्पादन की शक्तियों के विकसित होने के साथ-साथ सर्वहारा और अधिक गरीब होते जाते हैं।” श्रमिकों का शोषण केवल उनके दुख और गरीबी को बढ़ा सकता है। मार्क्स कहते हैं, “बुर्जुआ वर्ग की संपत्ति बड़े मुनाफ़े से बढ़ती है और उसी के अनुरूप गरीबी में भी वृद्धि होती है; गुलामी के दबाव से, सर्वहारा वर्ग के शोषण से।”

- In every mode of production which involves the exploitation of man by man, majority of people, the people who labour, are condemned to toil for no more than the barest necessities of life. With this, society gets divided into rich and poor. To Marx, poverty is the result of exploitation, not of scarcity.
- उत्पादन के प्रत्येक तरीके में जिसमें मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण शामिल होता है, अधिकांश लोग, जो लोग श्रम करते हैं, उन्हें जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं से अधिक के लिए परिश्रम करने के लिए अभिशप्त किया जाता है। इससे समाज अमीर और गरीब में बंट जाता है। माक्स के अनुसार गरीबी शोषण का परिणाम है, अभाव का नहीं।

COMMODITY

Marx examined the concept of commodity in a capitalist society as an economic product which was an outcome of a system of social relations. There is an immense accumulation of commodities in societies with capitalist mode of production. A single commodity is the basic unit of a capitalist society. A commodity is a thing outside of the human beings and satisfies human needs. There are various examples of commodities as shoes, dress, bread, butter. Diverse commodities satisfy diverse wants. A commodity displays both quantity and quality.

वस्तु

मार्क्स ने पूंजीवादी समाज में वस्तु की अवधारणा को एक आर्थिक उत्पाद के रूप में जांचा जो सामाजिक संबंधों की एक प्रणाली का परिणाम था। पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली वाले समाजों में वस्तुओं का अत्यधिक संचय होता है। एक एकल वस्तु पूंजीवादी समाज की मूल इकाई है। वस्तु मनुष्य से बाहर की वस्तु है और मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करती है। जूते, पोशाक, ब्रेड, मक्खन जैसी वस्तुओं के विभिन्न उदाहरण हैं। विविध वस्तुएँ विविध आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। एक वस्तु मात्रा और गुणवत्ता दोनों प्रदर्शित करती है।

- The value of a commodity is determined by the amount of labour socially necessary or socially necessary labour time required in producing it e.g., diamonds are more valuable than other commodities because they are rare to find on Earth's surface and diamonds also require more labour time to produce them. The two factors associated with a commodity in a capitalist society are use value and exchange value. Similarly, the labour that is embodied in a commodity also displays the two fold character that is useful labour and abstract labour.
- किसी वस्तु का मूल्य उसके उत्पादन में लगने वाले सामाजिक रूप से आवश्यक श्रम की मात्रा या सामाजिक रूप से आवश्यक श्रम समय से निर्धारित होता है, उदाहरण के लिए, हीरे अन्य वस्तुओं की तुलना में अधिक मूल्यवान हैं क्योंकि वे पृथ्वी की सतह पर मिलना दुर्लभ हैं और हीरे को उत्पादन करने के लिए अधिक श्रम समय की भी आवश्यकता होती है। उन्हें। पूंजीवादी समाज में किसी वस्तु से जुड़े दो कारक उपयोग मूल्य और विनिर्मेय मूल्य हैं। इसी प्रकार, किसी वस्तु में सन्निहित श्रम भी दो प्रकार के चरित्र प्रदर्शित करता है, अर्थात् उपयोगी श्रम और अमूर्त श्रम।

USE VALUE OF COMMODITIES

Commodities only have use value and value of a commodity is created when useful labour in the abstract is embodied in it. The use value of commodities according to Marx consists of two elements that are matter and labour. The use value of a commodity refers to the utility of a commodity or human need that a particular commodity fulfils. Use value refers to the ability of a commodity to render 'a particular service to an individual' e.g., shoes protect the feet, dress clothes the body, and bread and butter fulfils the need for hunger.

Bread

वस्तुओं का उपयोग मूल्य

वस्तुओं का केवल उपयोग मूल्य होता है और किसी वस्तु का मूल्य तब बनता है जब अमूर्त में उपयोगी श्रम उसमें समाहित हो जाता है। मार्क्स के अनुसार वस्तुओं के उपयोग मूल्य में दो तत्व शामिल हैं जो पदार्थ और श्रम हैं। किसी वस्तु का उपयोग मूल्य उस वस्तु की उपयोगिता या मानवीय आवश्यकता को संदर्भित करता है जैसे कोई विशेष वस्तु पूरा करती है। उपयोग मूल्य किसी वस्तु की 'किसी व्यक्ति को एक विशेष सेवा' प्रदान करने की क्षमता को संदर्भित करता है, उदाहरण के लिए, जूते पैरों की रक्षा करते हैं, कपड़े शरीर की रक्षा करते हैं, और रोटी और मक्खन भूख की आवश्यकता को पूरा करते हैं।

EXCHANGE VALUE OF COMMODITIES

Exchange value emerges in developed economies as capitalist society where commodities are bought and sold in the market. Exchange value is represented as the ability of definite quantitative proportion of a commodity to be represented in the value of a quantitative proportion of another commodity. For example one kg of tea can be represented in the value of 4 kg of rice. Exchange value of a commodity is accidental and changes with time and place.

वस्तुओं का विनिमय मूल्य

विनिमय मूल्य विकसित अर्थव्यवस्थाओं में पूंजीवादी समाज के रूप में उभरता है जहाँ वस्तुओं को बाजार में खरीदा और बेचा जाता है। विनिमय मूल्य को किसी वस्तु के निश्चित मात्रात्मक अनुपात को किसी अन्य वस्तु के मात्रात्मक अनुपात के मूल्य में दर्शाने की क्षमता के रूप में दर्शाया जाता है। उदाहरण के लिए एक किलो चाय को 4 किलो चावल के मूल्य में दर्शाया जा सकता है। किसी वस्तु का विनिमय मूल्य आकस्मिक होता है और समय और स्थान के साथ बदलता रहता है।

FETISHISM OF COMMODITIES



Commodity Fetishism is a concept which is closely related to Marxian idea of capitalistic production. It is a condition under capitalism under which social relations become expressed as relations between things. Marx' work on commodity fetishism is central to highlight the social structure of a capitalist society in relation to human potential.

वस्तुओं का अंधभक्तिवाद

कमोडिटी फेटिशिज्म एक अवधारणा है जो पूंजीवादी उत्पादन के मार्क्सवादी विचार से निकटता से संबंधित है। यह पूंजीवाद के तहत एक स्थिति है जिसके तहत सामाजिक संबंध चीजों के बीच संबंधों के रूप में व्यक्त होते हैं। कमोडिटी फेटिशिज्म पर मार्क्स का काम मानव क्षमता के संबंध में पूंजीवादी समाज की सामाजिक संरचना को उजागर करने के लिए केंद्रीय है।

- By fetish, Marx meant a thing that we ourselves make and then worship as if it were a god or spirit. In capitalism, the products that we make, their values, and the economy that consists of our exchanges all seem to take on lives of their own, separate from any human needs or decisions. Even our own labor – the thing that, according to Marx, makes us truly human – becomes a commodity that is bought and sold. Our labor acquires an exchange value that is separate from us. Thus, commodities become source of alienation.

- फेटिश से मार्क्स का मतलब एक ऐसी चीज से था जिसे हम खुद बनाते हैं और फिर उसकी पूजा इस तरह करते हैं मानो वह कोई भगवान या आत्मा हो। पूंजीवाद में, जो उत्पाद हम बनाते हैं, उनके मूल्य, और अर्थव्यवस्था जिसमें हमारे आदान-प्रदान शामिल होते हैं, वे सभी मानवीय जरूरतों या निर्णयों से अलग, अपने स्वयं के जीवन पर आधारित प्रतीत होते हैं। यहां तक कि हमारा अपना श्रम - वह चीज़ जो, मार्क्स के अनुसार, हमें वास्तव में मानव बनाती है - एक वस्तु बन जाती है जिसे खरीदा और बेचा जाता है। हमारा श्रम एक विनिमय मूल्य प्राप्त करता है जो हमसे अलग होता है। इस प्रकार, वस्तुएँ अलगाव का स्रोत बन जाती हैं।

- Marx called this process the fetishism of commodities. The concept takes us from the level of the individual actor to the level of large-scale social structures – religious, political, and organizational structures – and people reify the whole range of social relationships and social structures in the same way as people reify commodities and other economic phenomena.
- मार्क्स ने इस प्रक्रिया को वस्तुओं का अंधभक्ति कहा। यह अवधारणा हमें व्यक्तिगत कर्ता के स्तर से बड़े पैमाने की सामाजिक संरचनाओं - धार्मिक, राजनीतिक और संगठनात्मक संरचनाओं के स्तर तक ले जाती है - और लोग सामाजिक संबंधों और सामाजिक संरचनाओं की पूरी श्रृंखला को उसी तरह समझते हैं जैसे लोग वस्तुओं और वस्तुओं को मानते हैं। अन्य आर्थिक घटनाएं.

- The fetishism of commodities imparts to the economy an independent, objective reality that is external to, and coercive of, the actor. Looked at in this way, the fetishism of commodities is translated into the concept of reification. → C. Luck
Reification can be thought of as "thingification," or the process of coming to believe that humanly created social forms are natural, universal, and absolute things.
- वस्तुओं की अंधभक्ति अर्थव्यवस्था को एक स्वतंत्र, वस्तुनिष्ठ वास्तविकता प्रदान करती है जो कर्ता के लिए बाहरी और बाध्य करने वाली होती है। इस तरह से देखने पर, वस्तुओं की अंधभक्ति को पुनःकरण की अवधारणा में अनुवादित किया जाता है। पुनर्मूल्यांकन को "वस्तुकरण" के रूप में माना जा सकता है, या यह विश्वास करने की प्रक्रिया कि मानव निर्मित सामाजिक रूप प्राकृतिक, सार्वभौमिक और पूर्ण चीजें हैं।

CIRCULATION OF COMMODITIES

- Marx discussed two types of circulation of commodities.
- One type of circulation is characteristic of capital: *- Profit*
- Money → Commodities → (a larger sum of) Money (M1-C-M2). *M₁ - C - M₂*
- The other type is non capitalistic:
- Commodities → Money → Commodities (C1-M-C2).

वस्तुओं का प्रचलन

- मार्क्स ने वस्तुओं के दो प्रकार के प्रचलन की चर्चा की।
- एक प्रकार का संचलन पूंजी की विशेषता है:
- **धन → वस्तुएँ → (बड़ी राशि) धन (एम1-सी-एम2)।**
- दूसरा प्रकार गैर पूंजीवादी है:
- **कमोडिटीज → पैसा → कमोडिटीज (C1-M-C2)।**

- The primary goal of exchange in non capitalist circulation is a commodity that one can use and enjoy.
- In a capitalist circulation of commodities (M1-C-M2), the primary goal is to produce more money. Commodities are purchased in order to generate profit. In the capitalist circuit, referred to by Marx as “buying in order to sell”, the individual actor buys a commodity with money and, in turn, exchanges the commodity for presumably more money.

- गैर-पूंजीवादी प्रचलन में विनिमय का प्राथमिक लक्ष्य एक ऐसी वस्तु है जिसका कोई उपयोग और आनंद ले सके।
- वस्तुओं के पूंजीवादी प्रचलन (M1-C-M2) में, प्राथमिक लक्ष्य अधिक धन का उत्पादन करना है। लाभ कमाने के लिए वस्तुएँ खरीदी जाती हैं। पूंजीवादी सर्किट में, जिसे मार्क्स ने "बेचने के लिए खरीदना" के रूप में संदर्भित किया है, व्यक्तिगत अभिनेता पैसे के साथ एक वस्तु खरीदता है और बदले में, संभवतः अधिक पैसे के लिए वस्तु का आदान-प्रदान करता है।

ORGANIC CAPITAL

The organic composition of capital is a concept created by Karl Marx in his theory of capitalism. It is derived from his more basic concepts of 'value composition of capital' and 'technical composition of capital'. Marx defines the organic composition of capital as "the value-composition of capital, in so far as it is determined by its technical composition and mirrors the changes of the latter".

जैविक पूंजी

पूंजी की जैविक संरचना कार्ल मार्क्स द्वारा पूंजीवाद के सिद्धांत में बनाई गई एक अवधारणा है। यह उनकी 'पूंजी की मूल्य संरचना' और 'पूंजी की तकनीकी संरचना' की अधिक बुनियादी अवधारणाओं से लिया गया है। मार्क्स पूंजी की जैविक संरचना को "पूंजी की मूल्य-संरचना, जहां तक यह इसकी तकनीकी संरचना द्वारा निर्धारित होती है और बाद के परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करती है" के रूप में परिभाषित करती है।

- The 'technical composition of capital' measures the relation between the elements of **constant capital** (plant, equipment and materials) and **variable capital** (wage workers). It is 'technical' because no valuation is here involved. In contrast, the 'value composition of capital' is the ratio between the value of the elements of constant capital involved in production and the value of the labor. Marx found that the special concept of 'organic composition of capital' was sometimes useful in analysis, since it assumes that the relative values of all the elements of capital are constant.
- 'पूंजी की तकनीकी संरचना' **स्थिर पूंजी** (संयंत्र, उपकरण और सामग्री) और **परिवर्तनीय पूंजी** (मजदूरी श्रमिक) के तत्वों के बीच संबंध को मापती है। यह 'तकनीकी' है क्योंकि इसमें कोई मूल्यांकन शामिल नहीं है। इसके विपरीत, 'पूंजी की मूल्य संरचना' उत्पादन में शामिल स्थिर पूंजी के तत्वों के मूल्य और श्रम के मूल्य के बीच का अनुपात है। मार्क्स ने पाया कि 'पूंजी की जैविक संरचना' की विशेष अवधारणा कभी-कभी विश्लेषण में उपयोगी होती है, क्योंकि यह मानती है कि पूंजी के सभी तत्वों के सापेक्ष मूल्य स्थिर हैं।

THEORY OF LABOUR POWER

Labour power is the capacity to do such useful work which increases the value of products. Workers sell their labour power i.e. their capacity to do work which adds value to commodities. They sell their labour power to capitalists for a wage paid in cash.

श्रम शक्ति का सिद्धांत

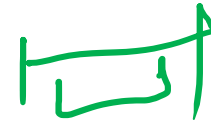
श्रम शक्ति ऐसे उपयोगी कार्य करने की क्षमता है जिससे उत्पादों के मूल्य में वृद्धि होती है। श्रमिक अपनी श्रम शक्ति यानी काम करने की क्षमता बेचते हैं जिससे वस्तुओं का मूल्य बढ़ता है। वे नकद वेतन के बदले पूंजीपतियों को अपनी श्रम शक्ति बेचते हैं।

- The capitalists invest money to buy goods and later sell them for more money than they invested. This is possible only if some value is added to those goods. Labour power, according to Marx, is precisely that capacity which adds value to a commodity. In buying and using labour power the capitalist is able to extract labour and labour is the source of value.

9

- पूंजीपति सामान खरीदने के लिए पैसा निवेश करते हैं और बाद में उन्हें निवेश से अधिक पैसे में बेच देते हैं। यह तभी संभव है जब उन वस्तुओं में कुछ मूल्य जोड़ा जाए। मार्क्स के अनुसार श्रम शक्ति वास्तव में वह क्षमता है जो किसी वस्तु में मूल्य जोड़ती है। श्रम शक्ति को खरीदने और उपयोग करने में पूंजीपति श्रम निकालने में सक्षम होता है और श्रम ही मूल्य का स्रोत होता है।

- The source of surplus value in capitalist system of production is located in the process whereby the value paid by capitalists for labour power is smaller than the value which labour power adds to a commodity.
- To Marx, the basic source of any value was the amount of socially necessary labor time needed to produce an article under the normal conditions of production and with the average degree of skill and intensity of the time. This is the well-known labor theory of value.



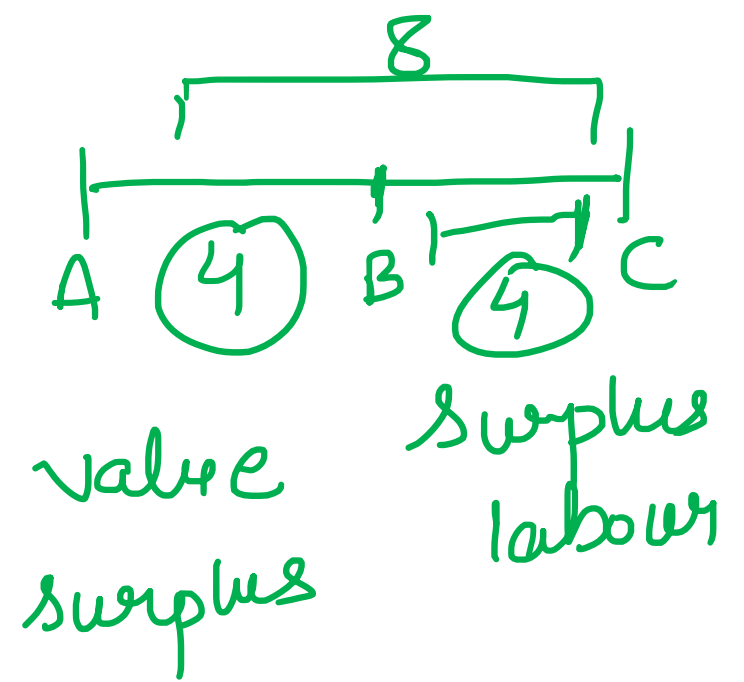
- पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली में अधिशेष मूल्य का स्रोत उस प्रक्रिया में स्थित होता है जिसके तहत पूंजीपतियों द्वारा श्रम शक्ति के लिए भुगतान किया जाने वाला मूल्य उस मूल्य से छोटा होता है जो श्रम शक्ति किसी वस्तु में जोड़ती है।
- मार्क्स के लिए, किसी भी मूल्य का मूल स्रोत उत्पादन की सामान्य परिस्थितियों में और उस समय की औसत डिग्री के कौशल और तीव्रता के साथ एक लेख तैयार करने के लिए आवश्यक सामाजिक रूप से आवश्यक श्रम समय की मात्रा थी। यह मूल्य का सुप्रसिद्ध श्रम सिद्धांत है।

THE THEORY OF SURPLUS VALUE

Labour power has the unique characteristic of being capable of producing more than its own value when it is put to productive use. The excess of value produced by labour power over its own value is called surplus value. The aim of the capitalist is to, always, increase this surplus value.

अधिशेष मूल्य का सिद्धांत

श्रम शक्ति की यह अनूठी विशेषता होती है कि जब उसे उत्पादक उपयोग में लाया जाता है तो वह अपने मूल्य से अधिक उत्पादन करने में सक्षम होती है। श्रम शक्ति द्वारा उत्पादित मूल्य की अपने मूल्य से अधिकता को अधिशेष मूल्य कहा जाता है। पूंजीपति का लक्ष्य हमेशा इस अधिशेष मूल्य को बढ़ाना होता है।



- Surplus value refers to the extra labour of the worker, for which he receives nothing from the producer or employer. It is appropriated by the capitalist. This implies exploitation of labour. It is the only cause of class conflict, or class struggle.
- अधिशेष मूल्य का तात्पर्य श्रमिक के अतिरिक्त श्रम से है, जिसके लिए उसे निर्माता या नियोक्ता से कुछ भी नहीं मिलता है। यह पूंजीपति द्वारा हड़प लिया जाता है। इसका तात्पर्य श्रम का शोषण है। यह वर्ग संघर्ष या वर्ग संघर्ष का एकमात्र कारण है।

RELIGION

Marx also sees religion as an ideology. He famously refers to religion as the opiate of the people.

Marx believed that religion, like all ideology, reflects a truth but that this truth is inverted. Because people cannot see that their distress and oppression are produced by the capitalist system, their distress and oppression are given a religious form. Marx clearly says that he is not against religion per se, but against a system that requires the illusions of religion.

धर्म

माक्स भी धर्म को एक विचारधारा के रूप में देखते हैं। वह प्रसिद्ध रूप से धर्म को लोगों की अफीम के रूप में संदर्भित करता है।

माक्स का मानना था कि धर्म, सभी विचारधाराओं की तरह, एक सच्चाई को प्रतिबिंबित करता है लेकिन यह सच्चाई उलटी है। क्योंकि लोग यह नहीं देख पाते कि उनका संकट और उत्पीड़न पूंजीवादी व्यवस्था द्वारा उत्पन्न किया गया है, इसलिए उनके संकट और उत्पीड़न को धार्मिक रूप दे दिया जाता है। माक्स स्पष्ट रूप से कहते हैं कि वह धर्म के खिलाफ नहीं हैं, बल्कि उस व्यवस्था के खिलाफ हैं जिसके लिए धर्म के भ्रम की आवश्यकता होती है।

- Marx felt that religion is amenable to becoming the form of ideology by portraying the injustice of capitalism as a test for the faithful and pushing any revolutionary change off into the afterlife. In this way, the cry of the oppressed is used to further oppression.
- मार्क्स ने महसूस किया कि पूंजीवाद के अन्याय को विश्वासियों के लिए एक परीक्षण के रूप में चित्रित करके और किसी भी क्रांतिकारी परिवर्तन को बाद के जीवन में धकेल कर धर्म विचारधारा का रूप बनने के लिए उत्तरदायी है। इस तरह, उत्पीड़ितों की चीख का उपयोग उत्पीड़न को और बढ़ाने के लिए किया जाता है।

MISCELLANEOUS CONCEPTS:-

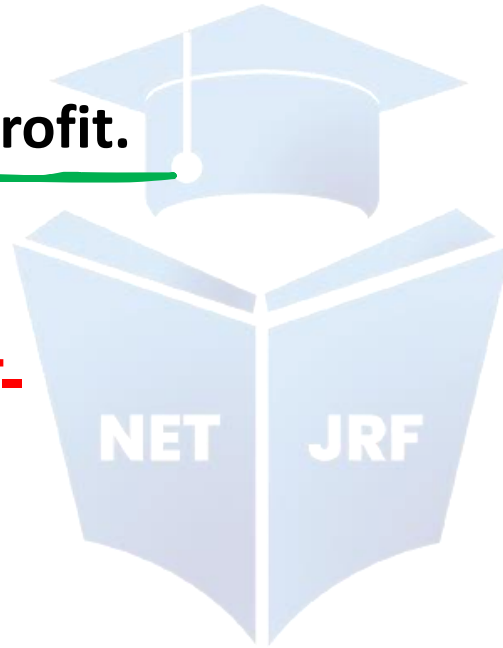
FEATURES OF CAPITALISM BY MARX-

- ✓ Exploitation
- ✓ Inherent inequality
- ✓ Slavery
- ✓ Class struggle
- ✓ Main motive: accumulation of profit.

विविध अवधारणाएँ:-

माक्स द्वारा पूंजीवाद की विशेषताएं-

- ✓ शोषण
 - अंतर्निहित असमानता
 - गुलामी
 - वर्ग संघर्ष
 - मुख्य उद्देश्य: लाभ संचय.



RESERVE ARMY OF LABOUR

Reserve army of labour is a Marxist term used to describe the ranks of the unemployed who – through the absence of any meaningful choice – are prepared to work for very low wages in temporary jobs. The existence of a reserve army of labour serves the interests of the bourgeoisie and exploits members of the proletariat.

श्रम की आरक्षित सेना

श्रम की आरक्षित सेना एक मार्क्सवादी शब्द है जिसका उपयोग उन बेरोजगारों की श्रेणी का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो - किसी सार्थक विकल्प के अभाव के कारण - अस्थायी नौकरियों में बहुत कम वेतन पर काम करने के लिए तैयार होते हैं। श्रमिकों की आरक्षित सेना का अस्तित्व पूंजीपति वर्ग के हितों की सेवा करता है और सर्वहारा वर्ग के सदस्यों का शोषण करता है।

PRAXIS → practical + theory

- In Marxism, "praxis" refers to the practical application of theory, particularly in the context of social and political change. Marxists believe that it is not enough to simply understand the world; one must also strive to change it.

प्रैक्सिस

- मार्क्सवाद में, "प्रैक्सिस" का तात्पर्य सिद्धांत के व्यावहारिक अनुप्रयोग से है, विशेष रूप से सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के संदर्भ में। मार्क्सवादियों का मानना है कि केवल दुनिया को समझना ही पर्याप्त नहीं है; इसे बदलने का प्रयास भी करना चाहिए।

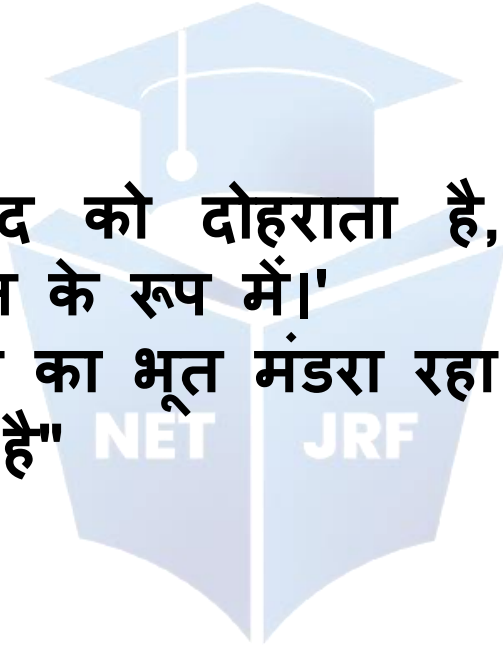
- Praxis involves the process of actively engaging in transformative social and political activities based on Marxist theory, with the goal of bringing about a more equitable and just society. This concept emphasizes the importance of combining theoretical understanding with concrete action in the pursuit of social and economic transformation.
- प्रैक्सिस में मार्क्सवादी सिद्धांत के आधार पर परिवर्तनकारी सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल होने की प्रक्रिया शामिल है, जिसका लक्ष्य एक अधिक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज बनाना है। यह अवधारणा सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की खोज में ठोस कार्रवाई के साथ सैद्धांतिक समझ के संयोजन के महत्व पर जोर देती है।

QUOTES:-

- According to Marx, 'History repeats itself, first as a tragedy, then as a farce'.
- "Spectre of communism haunting capitalism and Europe" *Communist Manifesto*
- "History repeats itself"

उद्धरण:-

- मार्क्स के अनुसार, 'इतिहास खुद को दोहराता है, पहले एक त्रासदी के रूप में, फिर एक प्रहसन के रूप में।'
- "पूंजीवाद और यूरोप पर साम्यवाद का भूत मंडरा रहा है"
- ✓ "इतिहास अपने आप को दोहराता है"



- "Capitalism has its own seeds of destruction"
- ✓ "The history of all hitherto existing societies is the history of class struggle"
- ✓ "Revolutions are locomotives of history"
- "I am not a Marxist"
- "पूंजीवाद के पास विनाश के अपने बीज हैं"
- ✓ "अब तक मौजूद सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है"
- ✓ "क्रांति इतिहास का इंजन हैं"
- "मैं मार्क्सवादी नहीं हूँ"



BOOKS BY KARL MARX

- 1) The Philosophical Manifesto of the Historical school of Law (1842)**
- 2) Critique of Hegel's philosophy of Right (1843)**
- 3) On the Jewish Questions (1843)**
- 4) Notes on James Mill (1844)**
- 5) The Holy Family (1845)**
- 6) Theses of Feuerbach (1845)**
- 7) The German Ideology (1845)**
- 8) The Poverty of Philosophy (1847)**
- 9) Wage, Labor and Capital (1847)**
- 10) The Manifesto of the Communist Party (1848) Marx and Engels**



कार्ल मार्क्स की पुस्तकें

- 1) ऐतिहासिक कानून विद्यालय का दार्शनिक घोषणापत्र (1842)
- 2) हेगेल के अधिकार दर्शन की आलोचना (1843)
- 3) यहूदी प्रश्नों पर (1843)
- 4) जेम्स मिल पर नोट्स (1844)
- 5) द होली फैमिली (1845)
- 6) फायरबैक की थीसिस (1845)
- 7) जर्मन विचारधारा (1845)
- 8) द पावर्टी ऑफ फिलॉसफी (1847)
- 9) वेतन, श्रम और पूंजी (1847)
- 10) कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र (1848) मार्क्स और एंगेल्स



- 11) The Class Struggle in France (1850)**
 - 12) The Eighteenth Brumaire of Louis Bonaparte (1852)**
 - 13) A Contribution to the Critique of Political Economy (1859)**
 - 14) Writings of the US Civil War (1861)**
 - 15) Theories of Surplus Value (3 volumes) (1862)**
 - 16) Value, Price and Profit (1865)**
 - 17) Capital -(vol-1) (1867)**
 - 18 The Civil War in France (1871)**
 - 19) Critique of Gotha Programme (1875)**
 - 20) Grundrisse (1957) (posthumously)**
 - 21) Capital-(vol-2) (1885) by Engels (posthumously)**
 - 22) Capital-(vol-3) (1894). by Engels (posthumously)**
 - 23) Economic and Philosophical Manuscripts of 1844 (1932) (posthumously)**
- 

- 11) फ्रांस में वर्ग संघर्ष (1850)
- 12) लुई बोनापार्ट की अठारहवीं ब्रुमायर (1852)
- 13) राजनीतिक अर्थव्यवस्था की आलोचना में एक योगदान (1859)
- 14) अमेरिकी गृह युद्ध के लेख (1861)
- 15) अधिशेष मूल्य के सिद्धांत (3 खंड) (1862)
- 16) मूल्य, मूल्य और लाभ (1865)
- 17) राजधानी -(खंड-1) (1867)
- 18 द सिविल वाज़ इन फ्रांस (1871)
- 19) गोथा कार्यक्रम की आलोचना (1875)
- 20) ग्रुंड्रिसे (1957) (मरणोपरांत)
- 21) कैपिटल-(वॉल्यूम-2) (1885) एंगेल्स द्वारा (मरणोपरांत)
- 22) राजधानी-(खंड-3) (1894)। एंगेल्स द्वारा (मरणोपरांत)
- 23) 1844 की आर्थिक और दार्शनिक पांडुलिपियाँ (1932) (मरणोपरांत)

MAX WEBER

Fri
Sat >

